

वीरभद्र की प्रतिमा अनावरण के बाद बदलता राजनीतिक परिदृश्य

शिमला/शैल। हिमाचल कांग्रेस में अंदरूनी असंतोष की चर्चाओं के बीच सराहन में वीरभद्र सिंह की प्रतिमा का अनावरण राजनीतिक संदेशों का केंद्र बन गया है। छः बार मुख्यमंत्री रहे वीरभद्र सिंह की विरासत से जुड़े इस कार्यक्रम में उपमुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री, मंत्री विक्रमादित्य सिंह, शिक्षा मंत्री रोहित ठाकुर, आरएस बाली, कौल सिंह ठाकुर, रामलाल ठाकुर, कुलदीप सिंह राठौर और पूर्व प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष प्रतिभा सिंह सहित कई वरिष्ठ नेताओं की मौजूदगी रही, लेकिन मुख्यमंत्री सुखविंद सिंह सुक्खू और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष विनय कुमार नहीं पहुंचे। इससे यह सवाल खड़ा हो गया है कि क्या यह केवल संयोग था या कांग्रेस के भीतर चल रही बेचौनी का कोई राजनीतिक संकेत? इसे सुनियोजित शक्ति प्रदर्शन कहने का प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं है, लेकिन नेताओं की मौजूदगी और शीर्ष नेतृत्व की गैरमौजूदगी ने इस चर्चा को जरूर हवा दी है।

वीरभद्र सिंह का राजनीतिक कद किसी एक परिवार या गुट तक सीमित नहीं था। दशकों तक प्रदेश की सत्ता और कांग्रेस की राजनीति में प्रभावशाली भूमिका निभाने वाले नेता की विरासत से जुड़े कार्यक्रम में मुख्यमंत्री और संगठन प्रमुख की अनुपस्थिति राजनीतिक रूप से असहज सवाल खड़े करती है। यदि पार्टी अपने वरिष्ठ नेता को साझा विरासत मानती है, तो उनके सम्मान से जुड़े कार्यक्रम में शीर्ष नेतृत्व की एकजुट मौजूदगी क्यों नहीं दिखी? क्या कांग्रेस के भीतर सरकार और संगठन के बीच दूरी है, या यह केवल कार्यक्रम से जुड़ा संयोग था? इन सवालों का जवाब अटकलों से नहीं,

संबंधित नेताओं की स्पष्ट प्रतिक्रिया से ही मिल सकता है।

इस घटनाक्रम की दूसरी कड़ी रोहडू में वीरभद्र सिंह की तस्वीर को लेकर प्रतिभा सिंह की सार्वजनिक नाराजगी है। मुख्यमंत्री के रोहडू और रामपुर दौरों से जुड़े कार्यक्रमों में वीरभद्र सिंह की तस्वीर और उनके योगदान का उल्लेख नहीं होने पर प्रतिभा सिंह ने सवाल उठाए थे। उनका कहना था कि तस्वीर हटाकर वीरभद्र सिंह को जनता के दिलों से दूर नहीं किया जा सकता। यह टिप्पणी कांग्रेस के भीतर पूर्व मुख्यमंत्री की विरासत को सम्मान देने के तरीके पर बहस का संकेत बनी। अब सराहन में मुख्यमंत्री की अनुपस्थिति ने उसी बहस को नया राजनीतिक संदर्भ दे दिया है।

सुक्खू सरकार के कार्यकाल में संगठन और सरकार के तालमेल को लेकर सवाल पहले भी उठते रहे हैं। पिछले दिनों कुछ मंत्रियों की कांग्रेस हाईकमान के वरिष्ठ नेताओं से मुलाकात के बाद मंत्रिमंडल विस्तार, विभागीय कामकाज और संगठनात्मक समन्वय को लेकर चर्चाएं तेज हुई थीं। उसके बाद प्रदेश प्रभारी रजनी पाटिल के का यह ब्यान कि मुख्यमंत्री की ओर से मंत्रिमंडल विस्तार का औपचारिक प्रस्ताव नहीं मिला है। इन घटनाओं ने पार्टी के भीतर संवाद और समन्वय को लेकर सवाल खड़े किए हैं। लेकिन इससे यह भी साबित नहीं होता कि सभी नेता मुख्यमंत्री के खिलाफ एकजुट होने लगे हैं या सराहन का कार्यक्रम किसी पूर्व नियोजित रणनीति का हिस्सा था।

कांग्रेस के सामने राजनीतिक चुनौती यह है कि सरकार की उपलब्धियों और चुनावी गारंटियों पर विपक्ष के सवालों के बीच अब नेतृत्व के तालमेल पर भी चर्चा हो रही है। रोजगार, आर्थिक दबाव और विकास कार्यों को लेकर उठने वाले सवालों का सामना करने के साथ पार्टी को यह भी दिखाना होगा कि उसके वरिष्ठ नेता और संगठन एक साझा राजनीतिक दिशा में काम कर रहे हैं।

सराहन का कार्यक्रम कांग्रेस में बगावत का प्रमाण नहीं, लेकिन इससे उठे सवालों को नजरअंदाज करना भी आसान नहीं होगा। सराहन के मंच पर जुटे नेताओं की मौजूदगी को हाईकमान के लिए संदेश मानना भी एक राजनीतिक संभावना हो सकती है। एक ओर वीरभद्र सिंह

की विरासत पर सम्मान की बहस है, दूसरी ओर मुख्यमंत्री और संगठन प्रमुख की अनुपस्थिति ने राजनीतिक व्याख्याओं को जगह दी है। रोहडू की टिप्पणी और हाईकमान से मंत्रियों की मुलाकात के साथ इन घटनाओं ने पार्टी के भीतर समन्वय की परीक्षा को चर्चा में ला दिया है।

अब सवाल यह है कि कांग्रेस हाईकमान पार्टी इन घटनाओं पर स्पष्टता लाकर राजनीतिक अटकलों को समाप्त करेगी, या वीरभद्र सिंह की विरासत और वर्तमान नेतृत्व के बीच संबंधों को लेकर सवाल आगे भी उठते रहेंगे? 2027 के विधानसभा चुनाव से पहले कांग्रेस के लिए चुनौती केवल विपक्ष का सामना करना नहीं, बल्कि अपने भीतर संवाद, सम्मान और एकजुटता को लेकर उठ रहे सवालों का जवाब देना भी है।

नए जिलों पर जयराम की चेतावनी भाजपा सरकार बनी तो होगा रिव्यू

शिमला/शैल। हिमाचल प्रदेश में नए जिलों के गठन की संभावित कवायद पर सियासी घमासान तेज हो गया है। नेता प्रतिपक्ष जयराम ठाकुर ने मुख्यमंत्री सुखविंद सिंह सुक्खू को चेतावनी दी है कि यदि नए जिले राजनीतिक लाभ के लिए बनाए गए या विधानसभा क्षेत्रों की सीमाओं से छेड़छाड़ कर जनभावनाओं की अनदेखी हुई, तो भाजपा सत्ता में लौटने पर इन फैसलों की समीक्षा करेगी। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार के समय संस्थानों को डिनोटिफाई करने वाली कांग्रेस को अब जनता ही सत्ता

से डिनोटिफाई करेगी।

चंबा में जयराम ठाकुर ने आरोप लगाया कि सुक्खू सरकार अपनी चुनावी गारंटियों और योजनाओं के क्रियान्वयन पर जवाब देने के बजाय नए जिलों के मुद्दे से जनता का ध्यान भटकाने की कोशिश कर रही है। उन्होंने गृहिणी सुविधा, शगुन, सहारा, हिमकेयर और स्वावलंबन योजनाओं का उल्लेख करते हुए दावा किया कि गरीबों और जरूरतमंदों को राहत देने वाली योजनाओं को कमजोर किया गया है।

नए जिलों के गठन पर भाजपा का रुख स्पष्ट करते हुए

उन्होंने कहा कि प्रशासनिक पुनर्गठन जनता की सुविधा, भौगोलिक परिस्थितियों और प्रशासनिक जरूरतों के आधार पर होना चाहिए। राजनीतिक समीकरण साधने के लिए विधानसभा क्षेत्रों को जोड़ने-तोड़ने का फैसला स्वीकार नहीं किया जाएगा।

जयराम ठाकुर ने पंचायत और नगर निकाय चुनावों में भाजपा समर्थित प्रत्याशियों के प्रदर्शन को कांग्रेस सरकार के खिलाफ जनभावना का संकेत बताया। उन्होंने कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर एसआईआर और चुनावी प्रक्रिया

को लेकर राजनीति करने का आरोप लगाया।

जयराम ठाकुर के बयान ने नए जिलों के गठन को आगामी विधानसभा चुनावों की संभावित राजनीतिक बहस से जोड़ दिया है। अब सरकार के सामने यह स्पष्ट करने की चुनौती है कि प्रस्तावित पुनर्गठन से आम लोगों को क्या लाभ होगा, प्रशासनिक पहुंच कैसे सुधरेगी और फैसले राजनीतिक प्रभाव से मुक्त कैसे रहेंगे। भाजपा ने फिलहाल इतना साफ कर दिया है कि सत्ता में वापसी होने पर वह पुनर्गठन के फैसलों की समीक्षा का विकल्प खुला रखेगी।

विकसित भारत - 2047 के लिए जनभागीदारी जरूरी: राज्यपाल

शिमला/शैल। राज्यपाल कविन्द्र गुप्ता ने कहा कि वर्ष 2047 तक भारत को विकसित, आत्मनिर्भर और मजबूत राष्ट्र बनाने के लिए हर नागरिक का योगदान जरूरी है। देश के

इस अवसर पर लेडी गवर्नर बिंदु गुप्ता भी मौजूद रहीं।

समागम को संबोधित करते हुए राज्यपाल ने कहा कि भारत की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक परंपराएं



विकास के साथ अपनी संस्कृति, परंपराओं और नैतिक मूल्यों को बचाकर रखना भी हमारी जिम्मेदारी है।

राज्यपाल जम्मू में जगद्गुरु महाब्रह्मर्षि कुमार स्वामी जी के आध्यात्मिक समागम में शामिल हुए।

सदियों से लोगों को शांति, सेवा और आपसी भाईचारे की प्रेरणा देती रही हैं। संतों और आध्यात्मिक गुरुओं का मार्गदर्शन लोगों में करुणा, अनुशासन और राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना को मजबूत करता है।

बाबा बंदा सिंह बहादुर की विरासत आज भी प्रेरणास्रोत: राज्यपाल

शिमला/शैल। राज्यपाल कविन्द्र गुप्ता ने कहा कि बाबा बंदा सिंह बहादुर का जीवन वीरता, त्याग, न्याय और समानता की मिसाल है। उनकी विरासत आज भी लोगों को अन्याय के खिलाफ खड़े होने और

राज्यपाल ने जम्मू के अभिनव थिएटर में आयोजित द्वितीय सिख बौद्धिक सम्मेलन-2026 को संबोधित करते हुए यह बात कही। सम्मेलन का आयोजन बाबा बंदा सिंह बहादुर मेमोरियल ट्रस्ट ने किया। इस अवसर पर उन्होंने



कमजोर वर्गों के अधिकारों की रक्षा करने की प्रेरणा देती है।

समाज के विकास में योगदान देने वाले बुद्धिजीवियों को सम्मानित भी किया।

अशोक सिंघल का जीवन भारतीय संस्कृति के प्रति समर्पण की प्रेरणा: राज्यपाल

शिमला/शैल। राज्यपाल कविन्द्र गुप्ता ने कहा कि विश्व हिंदू परिषद के पूर्व अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष अशोक सिंघल का जीवन भारतीय

सांस्कृतिक धरोहर को सुरक्षित रखने और भावी पीढ़ी तक पहुंचाने का संदेश देती है।

राज्यपाल शिमला के



संस्कृति, सनातन परंपराओं और सामाजिक सेवा के प्रति समर्पण की प्रेरणा देता है। उनकी विरासत देश की

ऐतिहासिक गेयटी थिएटर में अशोक सिंघल के जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम को

राज्यपाल ने लोक भवन में किया हवन, प्रदेश की खुशहाली की कामना

शिमला/शैल। राज्यपाल कविन्द्र गुप्ता ने शारदीय नवरात्रि के तीसरे दिन लोक भवन में हवन-यज्ञ कर हिमाचल प्रदेश की सुख-समृद्धि, शांति और खुशहाली की कामना की। इस दौरान लोक भवन के अधिकारियों और कर्मचारियों ने भी धार्मिक अनुष्ठान में भाग लिया तथा पूर्णाहुति अर्पित की।

राज्यपाल ने प्रदेशवासियों को नवरात्रि की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि मां दुर्गा की आराधना का यह पर्व शक्ति, साहस और सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक है। उन्होंने प्रदेश को प्राकृतिक आपदाओं से सुरक्षित रखने और सभी नागरिकों के कल्याण की प्रार्थना की।

उन्होंने कहा कि विकसित भारत का लक्ष्य हासिल करने के लिए प्रत्येक नागरिक को अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी। आधुनिकता को अपनाने के साथ देश की सांस्कृतिक विरासत और आध्यात्मिक परंपराओं को भी सुरक्षित रखना जरूरी है, ताकि आने वाली पीढ़ियां इनसे जुड़ी रहें।

राज्यपाल ने कहा कि भारत की असली ताकत विविधता में एकता है। समाज में नफरत, भ्रामक सूचनाओं और लोगों को बांटने वाली सोच से दूर रहना चाहिए। सभी समुदायों के बीच सद्भाव बनाए रखना हर नागरिक का दायित्व है।

इस अवसर पर जगद्गुरु महाब्रह्मर्षि कुमार स्वामी जी ने राज्यपाल को 'देश रत्न' सम्मान प्रदान किया। राज्यपाल ने सम्मान के लिए आभार जताते हुए कहा कि यह उनके लिए गर्व की बात है और समाज तथा राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को निभाने की प्रेरणा भी है।

राज्यपाल ने कहा कि गुरु गोबिंद सिंह जी से प्रेरणा लेकर बाबा बंदा सिंह बहादुर ने अन्याय के खिलाफ संघर्ष किया। सिख गुरुओं की शिक्षाएं आज भी सेवा, समानता और भाईचारे का संदेश देती हैं। गुरु नानक देव जी की शिक्षाओं और चार साहिबजादों के बलिदान से नई पीढ़ी को प्रेरणा लेनी चाहिए।

उन्होंने कहा कि 'सरबत दा भला' यानी सभी का कल्याण सिख धर्म का प्रमुख संदेश है। जम्मू-कश्मीर की साझा सांस्कृतिक विरासत को मजबूत बनाने के लिए सभी समुदायों के बीच आपसी सम्मान और संवाद जरूरी है।

राज्यपाल ने युवाओं के लिए अवसर बढ़ाने, महिलाओं को सशक्त बनाने और सभी को न्याय व सम्मान दिलाने में शिक्षा तथा सामाजिक भागीदारी की अहम भूमिका बताई।

संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि अशोक सिंघल ने हिंदू समाज को संगठित करने और भारतीय परंपराओं के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए जीवनभर कार्य किया।

उन्होंने राम जन्मभूमि आंदोलन में अशोक सिंघल की भूमिका का उल्लेख करते हुए कहा कि उन्होंने इस आंदोलन को संगठित करने और जनसमर्थन बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

राज्यपाल ने लोगों से सेवा, अनुशासन, त्याग और कर्तव्यनिष्ठा जैसे मूल्यों को अपनाने तथा भारतीय संस्कृति और परंपराओं को नई पीढ़ी तक पहुंचाने का आहवान किया।

इस अवसर पर राम जन्मभूमि आंदोलन से जुड़ी वरिष्ठ महिला कार सेविका राजदुलारी सूद और योगाचार्य विनोद को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में प्रो. वीर सिंह रंगड़ा और विश्व हिंदू परिषद के केन्द्रीय महामंत्री बजरंग लाल बागड़ा सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

शैल समाचार
संपादक मण्डल

संपादक - बलदेव शर्मा

सयुक्त संपादक: जे.पी. भारद्वाज

विधि सलाहकार: ऋचा शर्मा

राज्यपाल और मुख्यमंत्री ने दशहरा उत्सव पर प्रदेशवासियों को दी बधाई

शिमला/शैल। राज्यपाल कविन्द्र गुप्ता और मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविन्द्र सिंह सुक्खू ने दशहरा उत्सव के पावन अवसर पर प्रदेशवासियों को बधाई दी है। राज्यपाल ने कहा कि दशहरा उत्सव बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि यह पर्व प्रदेशभर में हर्ष व उल्लास के साथ मनाया जाएगा।

मुख्यमंत्री ने प्रदेशवासियों को दशहरा उत्सव पर शुभकामनाएं देते हुए कहा कि यह उत्सव सभी के जीवन में प्रसन्नता, शांति एवं खुशहाली लाएगा। उन्होंने कहा कि यह पर्व न केवल नैतिक मूल्यों और परम्पराओं को मजबूत करता है बल्कि यह संदेश भी देता है कि बुराई का अन्त हमेशा निश्चित होता है।

राज्यपाल ने जिम्मेदार और जनहित की पत्रकारिता पर दिया जोर

शिमला/शैल। राज्यपाल कविन्द्र गुप्ता ने कहा कि स्वतंत्र, निष्पक्ष और जिम्मेदार पत्रकारिता स्वस्थ लोकतंत्र की मजबूत नींव है। मीडिया का काम केवल खबरें देना नहीं, बल्कि जनता की समस्याओं को उठाना, लोगों को जागरूक करना और सरकार तथा समाज के बीच संवाद कायम करना भी है।

राज्यपाल शिमला में न्यूज 09 चैनल की ओर से आयोजित 'जैम्स ऑफ हिमाचल अवॉर्ड्स - 2026' समारोह में बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि डिजिटल तकनीक, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और सोशल मीडिया के दौर में भ्रामक और अपुष्ट खबरें तेजी से फैल रही हैं। ऐसे में खबर सबसे पहले देने की होड़ के बजाय सही और प्रमाणिक जानकारी देना अधिक जरूरी है।

उन्होंने कहा कि मीडिया को सनसनी फैलाने के बजाय तथ्यों और समाधान पर ध्यान देना चाहिए। जिम्मेदार पत्रकारिता का मतलब समस्याओं को छिपाना नहीं, बल्कि सच्चाई और संतुलित दृष्टिकोण के साथ उन्हें सामने लाना है।

राज्यपाल ने नशे, महिलाओं और बच्चों की सुरक्षा, पर्यावरण संरक्षण तथा साइबर अपराध जैसे मुद्दों को प्रमुखता से उठाने की जरूरत बताई। उन्होंने कहा कि मीडिया कमजोर वर्गों की आवाज बनकर प्रशासन की जवाबदेही तय करने में भी योगदान दे सकता है।

इस अवसर पर राज्यपाल ने विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले लोगों को सम्मानित किया। न्यूज 09 के प्रबंध निदेशक अजय ठाकुर ने उनका स्वागत किया।

मातृभाषाओं के संरक्षण और प्राचीन लिपियों के पुनरुद्धार पर जोर

शिमला/शैल। राज्यपाल कविन्द्र गुप्ता ने मातृभाषाओं और स्थानीय बोलियों के संरक्षण के साथ प्राचीन भारतीय लिपियों के पुनरुद्धार का आहवान किया। उन्होंने विश्वविद्यालयों से इस दिशा में शोध करने और भारतीय भाषाओं के अध्ययन को बढ़ावा देने की अपील की।

राज्यपाल लोक भवन में 'अक्षर से आत्मबोध तक: त्रिभाषा सूत्र' पुस्तक के विमोचन समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि भाषा किसी भी राष्ट्र की संस्कृति, पहचान और सामूहिक चेतना का आधार होती है। भारतीय भाषाएं साहित्य, इतिहास, दर्शन और पारंपरिक ज्ञान की समृद्ध विरासत को संजोए हुए हैं।

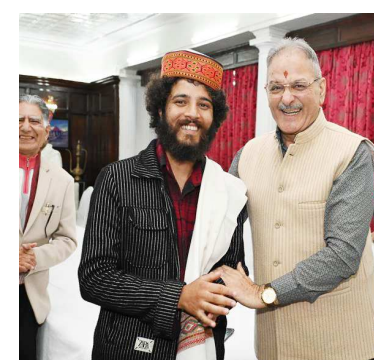
उन्होंने कहा कि भारत की एकता सभी लोगों के एक भाषा बोलने में नहीं, बल्कि विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों का सम्मान करने में है। मातृभाषा और स्थानीय बोलियां पीढ़ियों से चले आ रहे अनुभवों, लोकगीतों, कहानियों और परंपराओं को सुरक्षित रखती हैं।

राज्यपाल ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 में मातृभाषा और बहुभाषी शिक्षा के महत्व का उल्लेख करते हुए कहा कि अन्य भारतीय भाषाओं को सीखने से राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक समझ मजबूत होती है। उन्होंने विश्वास जताया कि यह पुस्तक भारतीय भाषाओं और ज्ञान परंपराओं के अध्ययन को नई दिशा देगी।

राज्यपाल ने चंद्रनाहन रंगमंच के कलाकारों को किया सम्मानित

शिमला/शैल। राज्यपाल कविन्द्र गुप्ता ने रोहड़ू के चंद्रनाहन रंगमंच के कलाकारों को लोक भवन

में एस. आर. हरनोट के चर्चित उपन्यास 'हिडिम्बा' पर आधारित नाटक 'मुखौटासुर' के मंचन के बाद दिया गया। नाटक में कलाकारों के अभिनय ने राज्यपाल को गहराई से प्रभावित किया था।



कलाकारों से बातचीत के दौरान राज्यपाल ने अपने कॉलेज के दिनों को याद करते हुए बताया कि उन्होंने भी एकांकी नाटकों में अभिनय किया था। उन्होंने कहा कि किसी प्रस्तुति को प्रभावशाली बनाने के लिए कलाकारों को काफी मेहनत करनी पड़ती है।

नाटक के निर्देशक कृष्ण भारती ने प्रस्तुति की तैयारियों और रंगमंच की गतिविधियों की जानकारी दी। इसके बाद कलाकारों ने लोक भवन का भ्रमण भी किया। इस अवसर पर राज्यपाल के सचिव संदीप भारद्वाज उपस्थित रहे।

मेडिकल कॉलेजों में पीजी सीटें 277 से बढ़कर 597 हुई: मुख्यमंत्री

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविन्द्र सिंह सुक्खू ने हिमाचल प्रदेश सचिवालय के आर्म्सडेल भवन चरण-4 के ब्लॉक-1 और ब्लॉक-2 का लोकार्पण किया। इन भवनों के

सचिवालय आर्म्सडेल भवन के दो ब्लॉक का लोकार्पण

मुख्यमंत्री ने बताया कि प्रदेश के छह सरकारी मेडिकल कॉलेजों में स्नातकोत्तर (पीजी) मेडिकल सीटों की संख्या 277 से बढ़ाकर 597 कर

उन्होंने कहा कि सीटें बढ़ने से युवा डॉक्टरों को प्रदेश में ही विशेषज्ञ चिकित्सा शिक्षा प्राप्त करने के अधिक अवसर मिलेंगे। इससे सरकारी अस्पतालों में विशेषज्ञ डॉक्टरों की उपलब्धता बढ़ाने में भी मदद मिलेगी।

मुख्यमंत्री के अनुसार, मेडिकल कॉलेजों में डॉक्टरों की उपलब्धता चार वर्ष पहले के 35 प्रतिशत से बढ़कर 70 प्रतिशत से अधिक हो गई है। सरकार का लक्ष्य अगले एक वर्ष में इसे 80 से 85 प्रतिशत तक पहुंचाना है। पुराने चिकित्सा उपकरणों को बदलने और रेडियो डायग्नोसिस सेवाओं को बेहतर बनाने पर भी काम किया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि विशेषज्ञ स्वास्थ्य सेवाएं प्रदेश में उपलब्ध होने से लोगों को इलाज के लिए बाहर जाने की जरूरत कम होगी और उनके खर्च में बचत होगी। प्रशासनिक इकाइयों के पुनर्गठन के लिए गठित आयोग की रिपोर्ट के आधार पर भी सरकार निर्णय लेगी।

संतुष्टि के बिना शिकायत का निपटारा पूरा नहीं माना जाता। राजस्व लोक अदालतों और राजस्व प्रबंधन प्रणाली से इंतकाल, भूमि बंटवारे और निशानदेही के लंबित मामलों को निपटाने में भी मदद मिली है।

मुख्यमंत्री ने शिक्षा, स्वास्थ्य और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सरकार की प्रमुख प्राथमिकताएं बताया। उन्होंने शिक्षा में हिमाचल के पांचवें स्थान पर पहुंचने, अस्पतालों में रोबोटिक सर्जरी की सुविधा और प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के प्रयासों का उल्लेख किया। उन्होंने दूध और प्राकृतिक खेती से तैयार फसलों के लिए निर्धारित खरीद दरों की भी जानकारी दी।

उन्होंने कहा कि हिमाचल के वन, नदियां और जलविद्युत संसाधन देश के लिए महत्वपूर्ण हैं। इसलिए पहाड़ी राज्यों को प्राकृतिक आपदाओं और पर्यावरण संरक्षण से जुड़ी चुनौतियों के मद्देनजर उचित वित्तीय सहायता मिलनी चाहिए। सम्मेलन में केंद्र और राज्य के वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित रहे।

काजा और किन्नौर जिले के समदो में 47.95 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाले 66/22 केवी विद्युत उप-केंद्रों की आधारशिला भी रखी गई। फिलहाल स्पीति को किन्नौर के पृष्ठ स्थित उप-केंद्र से लगभग 200 किलोमीटर लंबे फीडर के जरिए बिजली मिलती है। लंबी लाइन के कारण वोल्टेज में उतार-चढ़ाव और तकनीकी बिजली हानि जैसी समस्याएं आती हैं, जो खराब मौसम में और बढ़ जाती हैं। नए उप-केंद्रों से बिजली वितरण व्यवस्था मजबूत होने और स्थानीय लोगों, पर्यटन, स्वास्थ्य सेवाओं तथा सीमावर्ती क्षेत्रों की जरूरतों को बेहतर ढंग से पूरा करने में मदद मिलेगी।

मुख्यमंत्री ने पिन घाटी में 39.55 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित चिदांग-तंगती खर तेलिंग सड़क का भी लोकार्पण किया। इसके अलावा स्पीति में 24.36 करोड़ रुपये की लागत से बने 12 किलोमीटर लंबे तांगयुत-हिक्किम सड़क मार्ग के उन्नयन कार्य का उद्घाटन किया। इन सड़कों से ग्रामीण क्षेत्रों में आवागमन आसान होने, कृषि उत्पादों के परिवहन और पर्यटन को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है। बेहतर सड़क संपर्क से स्वास्थ्य केंद्रों, शिक्षण संस्थानों और अन्य जरूरी सेवाओं तक पहुंच भी सुगम होगी।

धर्मशाला में 33.78 करोड़ से बनेगा इंडोर आइस स्केटिंग रिक

सीवरेज सुविधा का लोकार्पण, सात वार्डों के 7,500 परिवारों को मिलेगा लाभ

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविन्द्र सिंह सुक्खू ने कांगड़ा

जाएगी। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर



जिले के धर्मशाला स्थित सकोह में 33.78 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाले इंडोर आइस स्केटिंग रिक और रोलर स्केटिंग रिक की आधारशिला रखी। उन्होंने अधिकारियों को निर्माण कार्य में गुणवत्ता बनाए रखने और परियोजना को तय समय में पूरा करने के निर्देश दिए।

प्रस्तावित परिसर में जिम, बिलियर्ड्स रूम, कैफे और वीआईपी लाउंज की सुविधा होगी। इंडोर आइस स्केटिंग रिक की ऊपरी बालकनी में 1,079 दर्शकों के बैठने की व्यवस्था होगी, जबकि रोलर स्केटिंग रिक में 250 दर्शक बैठ सकेंगे। परिसर में 250 वाहनों की पार्किंग भी बनाई

धर्मशाला में 9.82 करोड़ रुपये की लागत से तैयार अत्याधुनिक सीवरेज एवं सेप्टेज प्रबंधन सुविधा का लोकार्पण भी किया। इस संयंत्र की क्षमता प्रतिदिन 60 किलोलीटर है। इससे सीवरेज नेटवर्क से वंचित शहर के सात वार्डों को सुविधा मिलेगी और करीब 7,500 परिवार लाभान्वित होंगे।

इस अवसर पर कृषि मंत्री चंद्र कुमार, ग्रामीण विकास मंत्री अनिरुद्ध सिंह, आयुष मंत्री यादविंद्र गोमा, उप मुख्य सचिव केवल सिंह पठानिया, पर्यटन विकास बोर्ड के अध्यक्ष आर. एस. बाली, मुख्यमंत्री के प्रधान सलाहकार गोकुल बुटेल सहित कई जनप्रतिनिधि और अधिकारी उपस्थित रहे।

शाहपुर दशहरा उत्सव को मिलेगा राज्य स्तरीय दर्जा: मुख्यमंत्री

एंटी-चिट्टा वाकाथॉन के जरिए नशे के खिलाफ जनजागरूकता का संदेश

शिमला/शैल। कांगड़ा जिले के शाहपुर में चिट्टे के खिलाफ जनजागरूकता फैलाने के लिए एंटी-चिट्टा वाकाथॉन आयोजित किया गया। मुख्यमंत्री सुखविन्द्र सिंह सुक्खू ने शिमला से वर्चुअल माध्यम से कार्यक्रम को संबोधित किया और शाहपुर दशहरा उत्सव को राज्य स्तरीय दर्जा देने की घोषणा की।

मुख्यमंत्री ने कहा कि चिट्टा युवाओं के भविष्य को बर्बाद करने के साथ परिवार और समाज को भी प्रभावित करता है। उन्होंने विद्यार्थियों से नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक रहने और अपने साथियों को भी जागरूक करने का आग्रह किया। उन्होंने युवाओं को खेलकूद, शिक्षा और रचनात्मक गतिविधियों से जुड़ने की सलाह दी।

मुख्यमंत्री ने अभिभावकों, शिक्षकों, सामाजिक संगठनों और जनप्रतिनिधियों से नशे के खिलाफ अभियान में सक्रिय भागीदारी निभाने की अपील की। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार नशा तस्करो के खिलाफ कार्रवाई करने और चिट्टे के अवैध कारोबार पर अंकुश लगाने के लिए प्रतिबद्ध है। लोगों से नशे से जुड़ी गतिविधियों की सूचना संबंधित अधिकारियों को देने का भी आग्रह किया।

कार्यक्रम में उपमुख्य सचिव केवल सिंह पठानिया ने अभियान की जानकारी दी, जबकि महाधिवक्ता अनूप रतन ने नशामुक्त हिमाचल के लिए सामूहिक प्रयासों पर जोर दिया। वाकाथॉन में विद्यार्थियों, जनप्रतिनिधियों और स्थानीय लोगों ने भाग लिया।

हिमाचल में प्रशासनिक इकाइयों के पुनर्गठन के लिए आयोग गठित

छह महीने में सरकार को सौंपेगा रिपोर्ट, नई इकाइयों के गठन और विलय पर होगा विचार

शिमला/शैल। हिमाचल प्रदेश सरकार ने लोगों को बेहतर सुविधाएं देने और प्रशासनिक कामकाज को अधिक प्रभावी बनाने के लिए विभिन्न प्रशासनिक इकाइयों के पुनर्गठन हेतु आयोग का गठन किया है। आयोग जिलों, उपमंडलों, तहसीलों, उपतहसीलों और विकास खंडों की मौजूदा व्यवस्था की समीक्षा करेगा।

हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति धर्म चंद चौधरी आयोग के अध्यक्ष होंगे। अधिवक्ता विशाल पंवर और सेवानिवृत्त आईएफएस अधिकारी राजेश शर्मा सदस्य होंगे, जबकि निदेशक भू-अभिलेख सदस्य सचिव के रूप में कार्य करेंगे।

आयोग जनसंख्या, भौगोलिक

परिस्थितियों, लोगों की पहुंच और प्रशासनिक जरूरतों के आधार पर नई इकाइयों के गठन, मौजूदा इकाइयों के विलय या विभाजन पर सुझाव देगा। इसके लिए जनप्रतिनिधियों, संबंधित विभागों और अन्य हितधारकों से भी विचार-विमर्श किया जाएगा।

आयोग प्रशासनिक बदलावों पर होने वाले खर्च, कर्मचारियों और बुनियादी सुविधाओं की जरूरत का आकलन भी करेगा। साथ ही, सरकारी खजाने पर अतिरिक्त बोझ डाले बिना संसाधनों के बेहतर इस्तेमाल के उपाय सुझाएगा।

आयोग का मुख्यालय शिमला में होगा। अधिसूचना जारी होने की तारीख से छह महीने के भीतर इसे अपनी अंतिम रिपोर्ट सरकार को सौंपनी होगी।

निर्माण पर करीब 9 करोड़ रुपये खर्च किए गए हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि विकास कार्यों के साथ सरकारी संस्थानों के बुनियादी ढांचे को मजबूत करना भी प्रदेश सरकार की प्राथमिकता है। इन भवनों में जल्द ही कार्यालय स्थानांतरित किए जाएंगे।

दी गई है। इससे 320 अतिरिक्त सीटें उपलब्ध हुई हैं। आईजीएमसी शिमला में सीटें 139 से बढ़ाकर 230 और टांडा मेडिकल कॉलेज में 99 से बढ़ाकर 156 की गई हैं। इसी तरह मंडी, नाहन, चंबा और हमीरपुर के मेडिकल कॉलेजों में भी सीटें बढ़ाई गई हैं।

डिजिटल सेवाओं से लोगों का जीवन आसान बनाना सरकार का लक्ष्य: मुख्यमंत्री

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविन्द्र सिंह सुक्खू ने कहा कि

सुधार एवं ई-गवर्नेंस पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन को संबोधित



डिजिटल गवर्नेंस का उद्देश्य सरकारी सेवाओं को सरल, तेज और पारदर्शी बनाना है, ताकि आम लोगों को सरकारी काम करवाने के लिए बार-बार कार्यालयों के चक्कर न लगाने पड़ें। उन्होंने कहा कि तकनीक का वास्तविक लाभ तभी है, जब दूरदराज के क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को भी इसका फायदा मिले।

मुख्यमंत्री धर्मशाला में प्रशासनिक

कर रहे थे। उन्होंने कहा कि सरकार का लक्ष्य प्रशासन को जवाबदेह बनाना और जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ लोगों तक पहुंचाना है।

मुख्यमंत्री ने बताया कि सिंगल विंडो सिटीजन पोर्टल, मुख्यमंत्री हेल्पलाइन और शिकायत निवारण पोर्टल के माध्यम से लोगों को सेवाएं उपलब्ध करवाई जा रही हैं। शिकायतकर्ता की

स्पीति में पहला बैटरी स्टोरेज वाला सौर ऊर्जा संयंत्र शुरू

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री सुखविन्द्र सिंह सुक्खू ने लाहौल-स्पीति में 116.28 करोड़ रुपये की विकास परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास किया। इनमें स्पीति घाटी

स्थापित की गई है। समुद्र तल से करीब 3,600 मीटर की ऊंचाई पर स्थित इस संयंत्र से सालाना लगभग 36 लाख यूनिट बिजली उत्पादन की संभावना है। दिसंबर 2024 में इसका संचालन



के रोंगटोंग में प्रदेश का पहला बैटरी स्टोरेज आधारित सौर ऊर्जा संयंत्र, दो विद्युत उप-केंद्र और दो सड़क परियोजनाएं शामिल हैं। इन परियोजनाओं से दुर्गम जनजातीय क्षेत्रों में बिजली आपूर्ति, सड़क संपर्क और पर्यटन सुविधाओं को बेहतर बनाने में मदद मिलने की उम्मीद है।

मुख्यमंत्री ने काजा में 4.42 करोड़ रुपये की लागत से बने दो मेगावाट क्षमता के सौर ऊर्जा संयंत्र का लोकार्पण किया। इसके साथ एक मेगावाट-आवर क्षमता की बैटरी भंडारण प्रणाली भी

शुरू हुआ था। 30 सितंबर 2026 तक इससे कुल 22,58,752 यूनिट बिजली का उत्पादन हो चुका है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्ष 2023 में स्पीति के दौरे के दौरान स्थानीय लोगों ने बिजली आपूर्ति की गुणवत्ता और विश्वसनीयता से जुड़ी समस्याएं उठाई थीं। सौर ऊर्जा संयंत्र का संचालन इन समस्याओं के समाधान की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने रोंगटोंग जलविद्युत परियोजना को पूरी तरह चालू करने के लिए छह करोड़ रुपये खर्च करने की भी बात कही।

एक कार्य द्वारा एक हृदय को प्रसन्न करना, प्रार्थना में झुके हुए हज़ार सिरों से बेहतर है।

.....महात्मा गांधी

सम्पादकीय

सियासत के बीच जनता के सवाल



हिमाचल प्रदेश की राजनीति अब धीरे-धीरे 2027 के विधानसभा चुनाव की दिशा में बढ़ रही है। कांग्रेस और भाजपा की गतिविधियों, नेताओं के बयानों, संगठनात्मक बैठकों और एक-दूसरे पर हमलों को केवल रोजमर्रा की राजनीतिक बयानबाजी मानना सही नहीं होगा। इन गतिविधियों के पीछे सत्ता में बने रहने और सत्ता में वापसी की रणनीति काम कर रही है। लेकिन इस राजनीतिक मुकाबले

का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह है कि दोनों प्रमुख दल अपनी चुनावी तैयारी में कितनी जगह जनता के वास्तविक सवालों को देते हैं।

मुख्यमंत्री सुखविन्द सिंह सुक्खू के नेतृत्व वाली कांग्रेस सरकार के लिए यह समय अपने कार्यकाल के मूल्यांकन का है। सरकार के पास अभी भी अपनी नीतियों और फैसलों के परिणाम जनता के सामने रखने का अवसर है। चुनावी गारंटियों की प्रगति, रोजगार, स्वास्थ्य सेवाएं, ग्रामीण विकास, महंगाई और राज्य की आर्थिक स्थिति ऐसे मुद्दे हैं, जिन पर सरकार को स्पष्ट जवाब देने होंगे। प्रशासनिक इकाइयों के पुनर्गठन या नए जिलों की संभावनाओं पर विचार तभी सार्थक होगा, जब उसका आधार जनसुविधा, भौगोलिक परिस्थितियां और प्रशासनिक दक्षता हो। यदि ऐसे फैसलों को राजनीतिक लाभ के चश्मे से देखा जाने लगे, तो उनकी उपयोगिता पर सवाल उठाना स्वाभाविक है। सरकार को इस आशंका को दूर करने के लिए पारदर्शी मानदंड और स्पष्ट कार्ययोजना सामने रखनी चाहिए।

नेता प्रतिपक्ष जयराम ठाकुर और प्रदेश भाजपा अध्यक्ष राजीव बिंदल आर्थिक स्थिति, विकास कार्यों, चुनावी वादों और प्रशासनिक फैसलों को लेकर कांग्रेस को घेर रहे हैं। हाल के दिनों में नए जिलों के गठन की संभावनाओं और पूर्व मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह की राजनीतिक विरासत को लेकर भी दोनों दलों के बीच आरोप-प्रत्यारोप सामने आए हैं। इससे स्पष्ट है कि चुनाव से पहले राजनीतिक विमर्श केवल सरकार के कामकाज तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि नेतृत्व, संगठन और राजनीतिक पहचान के सवाल भी इसमें शामिल होंगे।

सरकार की कमियां गिनाना विपक्ष का अधिकार और दायित्व है, लेकिन क्या भाजपा जनता के सामने अपना ठोस वैकल्पिक कार्यक्रम भी रख रही है? यदि कांग्रेस की आर्थिक नीतियों पर सवाल उठाए जा रहे हैं, तो भाजपा को यह बताना होगा कि राज्य की वित्तीय चुनौतियों से निपटने का उसका रास्ता क्या होगा। यदि रोजगार और स्वास्थ्य सेवाओं को लेकर सरकार की आलोचना की जा रही है, तो इन क्षेत्रों में भाजपा की प्राथमिकताएं और प्रस्ताव क्या हैं? केवल सरकार बदलने का दावा करना पर्याप्त नहीं होगा। जनता को यह भरोसा चाहिए कि बदलाव से उसकी समस्याओं का समाधान होगा।

भाजपा आंतरिक चुनौतियों से पूरी तरह मुक्त नहीं है। चुनाव में नेतृत्व का चेहरा कौन होगा, टिकट वितरण कैसे होगा और अलग-अलग नेताओं की महत्वाकांक्षाओं के बीच संतुलन कैसे बनेगा ये ऐसे प्रश्न हैं, जिनका जवाब समय रहते तलाशना होगा। कांग्रेस की आंतरिक चुनौतियों को मुद्दा बनाने वाली भाजपा को अपने भीतर के समीकरण भी स्पष्ट रखने होंगे।

स्थानीय निकाय चुनावों में भाजपा की सफलता ने उसे राजनीतिक बढ़त का दावा करने का अवसर दिया है, जबकि कांग्रेस के लिए यह परिणाम आत्ममंथन का संकेत है। विधानसभा चुनाव में मतदाता सरकार के समग्र प्रदर्शन, नेतृत्व, नीतियों और भविष्य की संभावनाओं को भी परखते हैं। इसलिए दोनों दलों के लिए जरूरी है कि वे इन परिणामों से राजनीतिक संदेश तो लें, लेकिन जनता के मूड को लेकर अतिआत्मविश्वास से बचें।

राज्य की वित्तीय स्थिति पर बहस केवल कर्ज के आंकड़े उछालने या केंद्र और राज्य सरकार के बीच आरोप लगाने तक सीमित नहीं रहनी चाहिए। यह भी स्पष्ट होना चाहिए कि राजस्व बढ़ाने, अनावश्यक खर्च रोकने, विकास परियोजनाओं को समय पर पूरा करने और सामाजिक कल्याण योजनाओं को प्रभावी बनाने के लिए क्या कदम उठाए जा रहे हैं। सरकार को अपने खर्च और उपलब्धियों का हिसाब देना चाहिए, जबकि विपक्ष को आलोचना के साथ व्यवहारिक विकल्प भी प्रस्तुत करने चाहिए। हिमाचल की जनता को आरोपों की अंतहीन लड़ाई नहीं, जवाबदेह सरकार, जिम्मेदार विपक्ष और विकास की स्पष्ट दिशा चाहिए। सत्ता की जंग में राजनीतिक दलों की असली परीक्षा उनके काम, नीतियों और जनता के प्रति जवाबदेही से होगी।

इस्लामी नारीवाद व मानववाद : धार्मिक परंपरा में समानता, न्याय और मानवीय गरिमा की पड़ताल



गौतम चौधरी

समकालीन धार्मिक और शैक्षणिक विमर्श में 'इस्लामी नारीवाद' और 'इस्लामी मानववाद' जैसी अवधारणाएं बहस के विषय बने हुए हैं। इनके आलोचकों में पारंपरिक धार्मिक विचारक और धर्मनिरपेक्ष चिंतक, दोनों शामिल हैं। एक पक्ष इन्हें इस्लाम पर थोपी गई पश्चिमी विचारधारा मानता है, जबकि दूसरा पक्ष इनके माध्यम से इस्लाम की पारंपरिक मान्यताओं को आधुनिक मूल्यों के अनुरूप प्रस्तुत करने के प्रयास पर सवाल उठाता है। इन आपत्तियों को पूरी तरह निराधार नहीं कहा जा सकता। फिर भी, किसी विचार की प्रासंगिकता का निर्णय केवल उसके नाम या भौगोलिक उद्गम के आधार पर करना उचित नहीं है। उसके तर्क, नैतिक आधार और व्यावहारिक परिणामों की पड़ताल भी आवश्यक है।

इस्लामी नारीवाद और इस्लामी मानववाद को इसी कसौटी पर समझने की जरूरत है। दोनों अवधारणाएं न्याय, मानवीय गरिमा और धार्मिक परंपरा की व्याख्या से जुड़ी हैं। हालांकि, इनके अर्थ और उद्देश्य अलग-अलग हैं। इस्लामी नारीवाद मुख्यतः महिलाओं के अधिकारों, समानता और धार्मिक-सामाजिक संस्थाओं में उनकी स्थिति पर केंद्रित है, जबकि इस्लामी मानववाद मनुष्य की गरिमा, उसके कल्याण, विवेक और नैतिक उत्तरदायित्व को व्यापक संदर्भ में देखता है।

नारीवाद का सामान्य उद्देश्य महिलाओं के साथ होने वाले भेदभाव को समझना, उनके अधिकारों की रक्षा करना और सामाजिक संस्थाओं में समान अवसर सुनिश्चित करना है। इस्लामी नारीवाद इस उद्देश्य को इस्लामी धार्मिक और बौद्धिक परंपरा के भीतर रखकर देखता है। इसके समर्थक कुरान की व्याख्या, इस्लामी इतिहास और धार्मिक कानून की परंपराओं का पुनर्पाठ करते हुए यह समझने का प्रयास करते हैं कि महिलाओं की सामाजिक स्थिति और उनके अधिकारों से जुड़े प्रश्नों पर अधिक न्यायपूर्ण दृष्टिकोण कैसे विकसित किया जा सकता है।

इस संदर्भ में हजरत आयशा बिनत अबू बक्र का व्यक्तित्व उल्लेखनीय है। वे पैगंबर मुहम्मद की पत्नी होने के साथ-साथ हदीस की महत्वपूर्ण विदुषी और धार्मिक ज्ञान की प्रभावशाली व्याख्याकार भी थीं। इस्लामी परंपरा में उनके ज्ञान, स्मरणशक्ति और तर्कशीलता का विशेष स्थान है। उनसे अनेक धार्मिक परंपराएं

और शिक्षाएं संबद्ध हैं। उन्होंने कुछ अवसरों पर प्रचलित धारणाओं और अन्य विद्वानों की व्याख्याओं पर प्रश्न भी उठाए। उनके उदाहरण से स्पष्ट होता है कि इस्लामी बौद्धिक परंपरा में महिलाओं की विद्वत्ता और धार्मिक विमर्श में उनकी भागीदारी के लिए ऐतिहासिक आधार मौजूद हैं।

हालांकि, हजरत आयशा को आधुनिक अर्थों में नारीवादी घोषित करना ऐतिहासिक दृष्टि से उचित नहीं होगा। आधुनिक नारीवाद का विकास एक विशिष्ट ऐतिहासिक और सामाजिक संदर्भ में हुआ, जो हजरत आयशा के समय से काफी अलग था। फिर भी, उनका बौद्धिक योगदान इस धारणा को चुनौती देता है कि धार्मिक ज्ञान, तर्क और व्याख्या का अधिकार केवल पुरुषों तक सीमित रहा है। इस अर्थ में उन्हें इस्लामी नारीवाद की ऐतिहासिक प्रेरणाओं में से एक के रूप में देखा जा सकता है, न कि आधुनिक नारीवाद की प्रतिनिधि के रूप में।

इस्लामी नारीवाद की एक प्रमुख विशेषता यह भी है कि वह धार्मिक ग्रंथों और उनकी ऐतिहासिक व्याख्याओं के बीच अंतर करने पर बल देता है। किसी धार्मिक सिद्धांत की व्याख्या करने वाले विद्वान भी अपने समय की सामाजिक परिस्थितियों से प्रभावित हो सकते हैं। इसलिए किसी ऐतिहासिक व्याख्या को अंतिम और अपरिवर्तनीय मानने के बजाय उसके तर्क, संदर्भ और न्याय संबंधी परिणामों की जांच की जा सकती है।

व्यावहारिक स्तर पर इस दृष्टिकोण का अर्थ है कि महिलाओं की शिक्षा, संपत्ति के अधिकार, विवाह में उनकी सहमति, पारिवारिक निर्णयों में भागीदारी, कार्यस्थल पर समान अवसर और हिंसा से सुरक्षा जैसे प्रश्नों पर गंभीर विचार किया जाए। इन मुद्दों पर धार्मिक परंपरा की व्याख्या करते समय महिलाओं के अनुभवों और उनकी आवाज को भी महत्व दिया जाना चाहिए।

इस्लामी नारीवाद का औचित्य तभी मजबूत होगा, जब वह केवल वैचारिक बहस तक सीमित न रहे, बल्कि महिलाओं की वास्तविक समस्याओं के समाधान में योगदान दे। साथ ही, उसके समर्थकों को भी यह स्वीकार करना होगा कि मुस्लिम समाजों में महिलाओं की स्थिति एक जैसी नहीं है। अलग-अलग देशों, समुदायों, वर्गों और सांस्कृतिक परिस्थितियों में उनकी चुनौतियां भी अलग-अलग हैं।

इस्लामी मानववाद का केंद्र मनुष्य की गरिमा, उसके कल्याण और नैतिक उत्तरदायित्व का विचार है। आधुनिक मानववाद की कुछ धाराएं मनुष्य के विवेक और अनुभव को प्रमुख आधार मानती हैं, जबकि इस्लामी चिंतन में मनुष्य की गरिमा और उसके नैतिक दायित्व को ईश्वर, सृष्टि और सामाजिक न्याय के संबंध में समझा जाता है। दोनों परंपराओं में कुछ समानताएं हैं, लेकिन उनके दार्शनिक आधार पूरी तरह एक जैसे नहीं हैं।

पवित्र कुरान में मनुष्य की गरिमा का विचार महत्वपूर्ण है। सूरह

अल-इसरा की आयत 70 में आदम की संतान को सम्मानित किए जाने का उल्लेख मिलता है। इस सिद्धांत की व्यापक व्याख्या यह आधार प्रदान करता है कि मनुष्य के साथ व्यवहार करते समय उसकी गरिमा का सम्मान किया जाना चाहिए। किसी व्यक्ति की जातीय पहचान, सामाजिक स्थिति, आर्थिक सामर्थ्य या अन्य मानवीय भिन्नताओं के आधार पर उसके साथ अपमानजनक व्यवहार को उचित नहीं ठहराया जा सकता।

इस्लामी बौद्धिक परंपरा में 'अदब' की अवधारणा भी महत्वपूर्ण रही है। इसका अर्थ केवल शिष्टाचार नहीं, बल्कि ज्ञान, आचरण, विवेक और सामाजिक उत्तरदायित्व से भी जुड़ा है। इसी तरह, इस्लामी न्यायशास्त्र में विकसित 'मकासिद अल-शरीआ' अर्थात् शरीअत के उच्च उद्देश्यों की अवधारणा कानून के उद्देश्य और उसके मानवीय परिणामों को समझने का एक महत्वपूर्ण आधार प्रस्तुत करती है।

इस परंपरा के प्रमुख उद्देश्यों में जीवन, धर्म, बुद्धि, वंश अथवा परिवार और संपत्ति की रक्षा को स्थान दिया गया है। विभिन्न विद्वानों ने इन उद्देश्यों की व्याख्या और विस्तार अलग-अलग ढंग से किया है। बाद के कुछ विचारकों ने न्याय, स्वतंत्रता, गरिमा और सामाजिक कल्याण जैसे व्यापक उद्देश्यों पर भी बल दिया है। इसलिए मकासिद की परंपरा को केवल नियमों के संग्रह के रूप में नहीं, बल्कि कानून के उद्देश्य और समाज पर उसके प्रभाव की पड़ताल करने वाले बौद्धिक साधन के रूप में भी देखा जा सकता है।

इस्लामी मानववाद की व्यावहारिक उपयोगिता इसी बिंदु पर सामने आती है। यदि मानवीय गरिमा एक महत्वपूर्ण नैतिक मूल्य है, तो निर्धनों की सहायता, अनाथों के अधिकारों की रक्षा, जरूरतमंदों के प्रति संवेदनशीलता, न्यायपूर्ण व्यवहार और कमजोर वर्गों के शोषण का विरोध सामाजिक जीवन के अनिवार्य प्रश्न बन जाते हैं। यदि बुद्धि और विवेक की रक्षा महत्वपूर्ण है, तो शिक्षा, ज्ञानार्जन और विचार-विमर्श को भी महत्व मिलना चाहिए।

इसी तरह, जीवन की रक्षा का सिद्धांत स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता, हिंसा से सुरक्षा और मानवीय जीवन के सम्मान से जोड़ा जा सकता है। संपत्ति की रक्षा का अर्थ केवल निजी स्वामित्व की सुरक्षा नहीं, बल्कि चोरी, धोखाधड़ी, आर्थिक शोषण और अन्यायपूर्ण व्यवहार से लोगों को बचाना भी है।

इस प्रकार इस्लामी मानववाद की सार्थकता केवल धार्मिक विमर्श में नहीं, बल्कि उन सामाजिक परिस्थितियों में दिखाई देनी चाहिए, जिनमें मनुष्य की गरिमा और कल्याण प्रभावित होते हैं।

इस्लामी मानववाद और आधुनिक मानवाधिकारों में मानवीय गरिमा, न्याय तथा कल्याण जैसे विषयों पर समानता दिखाई देती है। दोनों के बीच संवाद की पर्याप्त गुंजाइश है। फिर भी, इन दोनों को पूरी तरह समान मान लेना उचित नहीं होगा।

शेष पृष्ठ 5 पर.....

चिट्टे के खिलाफ हिमाचल सरकार का निर्णायक प्रहार, नशा तस्करी के प्रति जीरो टॉलरेंस की नीति

शिमला। प्रदेश सरकार ने चिट्टा एवं अन्य मादक पदार्थों की तस्करी के विरुद्ध अभियान को और तेज करते हुए जीरो टॉलरेंस की नीति को सख्ती से लागू करना है। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविन्द सिंह सुक्खू के नेतृत्व में प्रदेश सरकार नशा तस्करी के नेटवर्क को ध्वस्त करने, युवाओं को नशे की गिरफ्त से बचाने तथा नशे की समस्या से प्रभावित व्यक्तियों को उपचार और पुनर्वास के माध्यम से समाज की मुख्यधारा में वापिस लाने के लिए बहुआयामी रणनीति के तहत कार्य कर रही है।

नशे के विरुद्ध इस अभियान को अधिक प्रभावी बनाने के लिए मार्च, 2025 में हिमाचल प्रदेश विधानसभा द्वारा दो महत्वपूर्ण विधेयक पारित किए गए। इनमें हिमाचल प्रदेश ड्रग्स एंड कंट्रोल सबस्टेंस विधेयक, 2025 तथा हिमाचल प्रदेश ऑर्गेनाइज्ड क्राइम्स (प्रिवेंशन एंड कंट्रोल) विधेयक, 2025 शामिल हैं। पहले विधेयक का उद्देश्य नशीले पदार्थों की रोकथाम, अपराधियों के विरुद्ध प्रभावी कार्रवाई तथा उपचार एवं पुनर्वास व्यवस्था को सुदृढ़ करना है, जबकि दूसरे विधेयक का उद्देश्य संगठित आपराधिक नेटवर्क के विरुद्ध कार्रवाई को मजबूत करने पर केंद्रित है।

प्रदेश सरकार ने स्पष्ट किया है कि नशा तस्करी में सलिप्त किसी भी व्यक्ति को राजनीतिक, आर्थिक अथवा सामाजिक प्रभाव के आधार पर संरक्षण नहीं दिया जाएगा। इसी प्रतिबद्धता के तहत तीन वर्षों की अवधि में एनडीपीएस से संबंधित 5,642 मामले दर्ज किए गए और 8,250 से अधिक लोगों को गिरफ्तार किया गया। कार्रवाई के दायरे में 139 सरकारी कर्मचारी भी आए, जिनमें राज्य सरकार के 15 कर्मचारियों और पुलिस विभाग के 22 कर्मियों को सेवा से बर्खास्त किए जाने की जानकारी दी गई है। प्रवर्तन एजेंसियां बार-बार नशा तस्करी में सलिप्त रहने वाले आरोपियों, नशे की संगठित आपूर्ति शृंखला और संदिग्ध वित्तीय गतिविधियों पर विशेष निगरानी रख रही है। इसके साथ ही पंचायत स्तर तक संदिग्ध नशा तस्करी नेटवर्क की पहचान करने तथा स्थानीय निगरानी व्यवस्था को मजबूत बनाने के प्रयास भी किए जा रहे हैं।

नशा तस्करी के विरुद्ध रणनीति को केवल गिरफ्तारियों तक सीमित न रखते हुए तस्करी की आर्थिक शक्ति पर प्रहार करने के लिए भी कदम उठाए गए हैं। मादक पदार्थों की अवैध तस्करी की रोकथाम से संबंधित पीआईटी-एनडीपीएस कानून के अंतर्गत दिसंबर, 2025 तक 46 बड़े नशा तस्करी के निरुद्ध किए जाने तथा लगभग 46 करोड़ रुपये की अवैध संपत्तियों को जब्त किए जाने की जानकारी दी गई।

वित्तीय जांच अभियान का एक महत्वपूर्ण घटक बनकर उभरी है।

एनडीपीएस के तहत 5,642 मुकदमें दर्ज, 8,250 से अधिक आरोपी गिरफ्तार, 91.24 करोड़ रुपये की संपत्ति से जुड़े 115 मामलों में

वर्ष 2024 से 2026 के दौरान हिमाचल प्रदेश के विभिन्न जिलों एवं पुलिस जिलों में कुल 115 मामलों में लगभग 91.24 करोड़ रुपये मूल्य की संपत्तियां फीज की गई। पुलिस जिला नूरपुर में 14 मामलों में 22.28 करोड़ रुपये मूल्य की संपत्तियां फीज की गई। इसके अतिरिक्त, सोलन में 15 मामलों में 17.86 करोड़ रुपये, शिमला में 16 मामलों में 12.61 करोड़ रुपये, ऊना में 2 मामलों में 10.98 करोड़ रुपये, सिरमौर में 7 मामलों में 8.84 करोड़ रुपये, कांगड़ा में 8 मामलों में 6.24 करोड़ रुपये, मंडी में 8 मामलों में 3.62 करोड़ रुपये, पुलिस जिला बदी में 21 मामलों में 5.12 करोड़ रुपये, बिलासपुर में 19 मामलों में 2.19 करोड़ रुपये, पुलिस जिला देहरा में 3 मामलों में 89.65 लाख रुपये तथा कुल्लू में 2 मामलों में 19.02 लाख रुपये मूल्य की संपत्तियां फीज की गई।

वर्ष 2024 में 12 मामलों में 25.43 करोड़ रुपये, वर्ष 2025 में 27 मामलों में 23.98 करोड़ रुपये तथा वर्ष 2026 में 76 मामलों में 41.42 करोड़ रुपये मूल्य की संपत्तियां फीज की गई। ये प्रयास वित्तीय जांच को सुदृढ़ करने तथा जांच के मामलों से संबंधित संपत्तियों की पहचान कर उन्हें फीज करने के प्रति राज्य सरकार की

निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं।

प्रशासनिक और कानूनी कार्रवाई के साथ-साथ सरकार ने आम नागरिकों को भी नशे के विरुद्ध अभियान से जोड़ने की पहल की है। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविन्द सिंह सुक्खू ने 1 दिसंबर, 2025 को धर्मशाला में आयोजित चिट्टा विरोधी जागरूकता वॉकआउट के दौरान चिट्टा सूचना पुरस्कार योजना का शुभारंभ किया। इस योजना के अंतर्गत 10 हजार रुपये से लेकर 10 लाख रुपये तक के नकद पुरस्कार का प्रावधान किया गया है। नागरिक आपातकालीन हेलपलाइन 112 के माध्यम से सूचना दे सकते हैं और सूचना देने वालों की पहचान गोपनीय रखने पर विशेष बल दिया गया है। इसके अतिरिक्त, पुलिस और स्थानीय समुदायों के बीच बेहतर समन्वय स्थापित करने के उद्देश्य से एंटी-चिट्टा वालंटियर टीम गठित करने का प्रस्ताव भी रखा गया है, ताकि नशा तस्करी से जुड़ी संदिग्ध गतिविधियों की जानकारी समय रहते प्राप्त की जा सके।

प्रदेश सरकार का मानना है कि नशे की समस्या का स्थायी समाधान केवल दंडात्मक कार्रवाई से संभव नहीं है, बल्कि इसके लिए युवाओं को सकारात्मक गतिविधियों से जोड़ना और समाज में व्यापक

जागरूकता पैदा करना भी आवश्यक है। इसी उद्देश्य से खे लो हिमाचल-चिट्टा मुक्त हिमाचल पहल के माध्यम से युवाओं को खेलकूद, शारीरिक गतिविधियों और रचनात्मक कार्यों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। शिमला, धर्मशाला, हमीरपुर, ऊना और बिलासपुर में आयोजित जागरूकता वॉकआउट के माध्यम से भी नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जनचेतना बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है।

इन पहलों का उद्देश्य युवाओं को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित करना, परिवारों को नशे के खतरों के प्रति जागरूक करना तथा शिक्षण संस्थानों और स्थानीय समुदायों की भागीदारी से नशामुक्ति के संदेश को व्यापक स्तर तक पहुंचाना है।

नशे की समस्या से प्रभावित व्यक्तियों को उपचार, पुनर्वास और सम्मानजनक जीवन में वापसी का अवसर उपलब्ध करवाना भी प्रदेश सरकार की रणनीति का महत्वपूर्ण हिस्सा है। शिमला जिला के मशोबरा स्थित नव-जीवन महिला नशामुक्ति एवं पुनर्वास केंद्र में महिलाओं के लिए विशेष देखभाल की व्यवस्था की गई है, जिसमें चिकित्सा उपचार, मनोवैज्ञानिक परामर्श, आवास और पुनर्वास संबंधी सहायता शामिल है।

इसके अतिरिक्त, डॉ. राजेंद्र प्रसाद राजकीय चिकित्सा महाविद्यालय, टांडा में एक अन्य नशामुक्ति एवं पुनर्वास केंद्र स्थापित करने की योजना है, जबकि सिरमौर जिला के कोटला बड़ोग में आधुनिक सुविधाओं से युक्त 100 बिस्तर क्षमता का नशामुक्ति एवं पुनर्वास केंद्र विकसित किया जा रहा है। इन प्रयासों का उद्देश्य उपचार सुविधाओं की क्षमता बढ़ाना और नशे से प्रभावित लोगों को उनकी आवश्यकता के अनुरूप सहायता उपलब्ध करवाना है।

इसी क्रम में प्रदेश सरकार ने नशामुक्ति, रोकथाम और पुनर्वास संबंधी प्रयासों को मजबूत करने के लिए नशामुक्ति रोकथाम एवं पुनर्वास बोर्ड का गठन भी किया है। जिला स्तर पर नशामुक्ति सेवाओं के विस्तार के माध्यम से उपचार, परामर्श और स्वस्थ जीवन की ओर लौटने में सहायता उपलब्ध करवाने पर बल दिया जा रहा है। पुनर्वास की यह व्यवस्था इस सोच पर आधारित है कि नशे की गिरफ्त में आए व्यक्तियों को समय पर उपचार, परिवार का सहयोग और समाज में दोबारा स्वीकार्यता मिले, ताकि वे नशामुक्त जीवन की ओर आगे बढ़ सकें। इस प्रकार सरकार की रणनीति में जहां नशा तस्करी के विरुद्ध कठोर कार्रवाई को प्राथमिकता दी गई है, वहीं नशे से प्रभावित लोगों के उपचार और पुनर्वास को भी समान महत्व दिया जा रहा है।

इस्लामी नारीवाद व मानववाद : धार्मिक परंपरा में समानता, न्याय और मानवीय

.....पृष्ठ 4 का शेष

इस्लामी मानववाद धार्मिक ग्रंथों, नैतिक परंपराओं और इस्लामी न्यायशास्त्र से प्रेरणा लेता है। दूसरी ओर, आधुनिक मानवाधिकारों का विकास विभिन्न दार्शनिक, राजनीतिक और विधिक परंपराओं के संवाद, संघर्ष और ऐतिहासिक अनुभवों के माध्यम से हुआ है। आधुनिक मानवाधिकारों की सार्वभौमिकता, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और समान नागरिकता से जुड़ी मान्यताओं का अपना विशिष्ट विकासक्रम है।

इन दोनों दृष्टिकोणों के बीच समान उद्देश्यों की पहचान की जा सकती है, लेकिन कुछ प्रश्नों पर उनके निष्कर्ष अलग भी हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, धार्मिक आस्था, लैंगिक समानता और पारिवारिक कानून से जुड़े मुद्दों पर धार्मिक व्याख्याओं तथा आधुनिक मानवाधिकार मानकों के बीच तनाव उत्पन्न हो सकता है। ऐसे मामलों में केवल समानताओं का उल्लेख पर्याप्त नहीं है। संबंधित सिद्धांतों, उनके आधारों और उनके व्यावहारिक परिणामों पर खुली चर्चा आवश्यक है।

इस्लामी मानववाद की वैचारिक शक्ति इसी में है कि वह अपनी धार्मिक जड़ों से प्रेरणा लेते हुए मानवीय गरिमा और न्याय के प्रश्नों पर गंभीर विचार करे। इसी प्रकार, आधुनिक मानवाधिकारों के साथ संवाद करते समय उसे उन अंतर्गतों को भी स्वीकार

करना चाहिए, जिन्हें केवल शब्दों या परिभाषाओं के माध्यम से समाप्त नहीं किया जा सकता।

इन दोनों अवधारणाओं के प्रति उठने वाली आपत्तियों पर गंभीरता से विचार करना भी जरूरी है। पारंपरिक धार्मिक दृष्टिकोण से यह प्रश्न उठाया जा सकता है कि यदि किसी आधुनिक विचार के आधार पर धार्मिक ग्रंथों की पुनर्व्याख्या की जाती है, तो क्या इससे स्थापित धार्मिक मान्यताओं का अर्थ बदल नहीं जाएगा? दूसरी ओर, धर्मनिरपेक्ष विचारक पूछ सकते हैं कि जब किसी व्यवस्था में धार्मिक कानून और परंपरागत सामाजिक संरचनाएं महिलाओं के अधिकारों या व्यक्तिगत स्वतंत्रता को सीमित करती हैं, तब उसी परंपरा के भीतर से समानता और स्वतंत्रता के पक्ष में तर्क देने की क्या सीमाएं होंगी?

इन प्रश्नों का उत्तर किसी एक पक्ष को पूरी तरह सही या गलत घोषित करके नहीं दिया जा सकता। धार्मिक ग्रंथों की व्याख्या, ऐतिहासिक परिस्थितियों और आधुनिक नैतिक मानकों के बीच संबंध जटिल है। इस्लामी नारीवाद के समर्थकों को यह स्पष्ट करना होगा कि वे समानता और न्याय के सिद्धांतों को किन आधारों पर स्थापित करते हैं। दूसरी ओर, पारंपरिक विचारकों को भी यह बताना होगा कि किसी प्रचलित व्याख्या को बनाए रखने के पक्ष में उनके तर्क क्या हैं और उसके सामाजिक परिणामों

का मूल्यांकन कैसे किया जाना चाहिए।

इसी प्रकार, इस्लामी मानववाद को केवल इस आधार पर आधुनिक मानवाधिकारों के समान नहीं मान लेना चाहिए कि दोनों मानवीय कल्याण की बात करते हैं। दोनों के बीच संवाद और समान उद्देश्यों की पहचान संभव है, लेकिन जहां उनके आधार या निष्कर्ष अलग हों, वहां उन अंतर्गतों पर खुली चर्चा भी जरूरी है।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि किसी अवधारणा की परीक्षा उसके नाम से नहीं, बल्कि उसके तर्क और परिणामों से होनी चाहिए। यदि कोई विचार महिलाओं के अधिकारों, न्यायपूर्ण व्यवहार और मानवीय गरिमा की रक्षा करता है, तो उसकी उपयोगिता पर विचार किया जाना चाहिए। साथ ही, उसके नाम पर किए जाने वाले दावों और उसकी वास्तविक उपलब्धियों की आलोचनात्मक समीक्षा भी होनी चाहिए।

इस्लामी नारीवाद और इस्लामी मानववाद को समझने के लिए उन्हें केवल पश्चिमी विचारधारा की नकल या धार्मिक परंपरा को आधुनिक बनाने के प्रयास के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है। दोनों अवधारणाएं इस प्रश्न से जुड़ी हैं कि धार्मिक परंपरा के भीतर न्याय, गरिमा और सामाजिक उत्तरदायित्व के सिद्धांतों को वर्तमान जीवन में किस प्रकार समझा और लागू किया जा सकता है।

इस्लामी नारीवाद महिलाओं की

शिक्षा, अधिकारों, सामाजिक भागीदारी और धार्मिक व्याख्या में उनकी भूमिका को केंद्र में रखता है। इस्लामी मानववाद मनुष्य की गरिमा, विवेक, कल्याण और न्यायपूर्ण सामाजिक व्यवस्था पर व्यापक दृष्टि प्रस्तुत करता है। दोनों के बीच समानता के कुछ बिंदु हैं, लेकिन उनकी अलग-अलग प्राथमिकताओं को समझना भी आवश्यक है।

इन अवधारणाओं की वास्तविक उपयोगिता तभी सिद्ध होगी, जब वे शिक्षा, परिवार, कानून, सामाजिक संस्थाओं और सार्वजनिक जीवन में न्यायपूर्ण व्यवहार को प्रोत्साहित करें। धार्मिक परंपरा का सम्मान और सामाजिक प्रश्नों पर आलोचनात्मक विचार एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं। किसी परंपरा की जीवंतता इस बात में भी दिखाई देती है कि उसके भीतर प्रश्न पूछने, तर्क करने और न्यायपूर्ण समाधान खोजने की गुंजाइश बनी रहे।

इस्लामी नारीवाद और इस्लामी मानववाद की तर्कसंगतता का प्रश्न केवल यह नहीं है कि ये अवधारणाएं इस्लाम के अनुकूल हैं या नहीं। असली प्रश्न यह है कि इनके माध्यम से धार्मिक ज्ञान, मानवीय अनुभव और सामाजिक न्याय के बीच कितना सार्थक संवाद स्थापित किया जा सकता है। यही संवाद इन विचारों को नारे से आगे ले जाकर व्यावहारिक सामाजिक परिवर्तन का आधार बना सकता है।

स्पीति के विकास पर 500 करोड़ रुपये खर्च करेगी सरकार:मुख्यमंत्री

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविन्द्र सिंह सुक्खू का दो दिवसीय स्पीति दौरा जनजातीय क्षेत्र में विकास सुविधाओं के विस्तार के लिहाज से

द्वार' कार्यक्रम के तहत रंगरिक्त में रात्रि प्रवास कर लोगों की समस्याएं सुनीं। उन्होंने रंगरिक्त के स्वास्थ्य उपकेन्द्र को प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र



महत्वपूर्ण रहा। मुख्यमंत्री ने काजा और आसपास के क्षेत्रों में 116.28 करोड़ रुपये की विकास परियोजनाओं के लोकार्पण और शिलान्यास किए। उन्होंने आने वाले समय में स्पीति के विकास पर 500 करोड़ रुपये खर्च करने की घोषणा भी की।

मुख्यमंत्री ने 'सरकार गांव के

में स्तरोन्नत करने और नए बालिका छात्रावास के लिए 2 करोड़ रुपये देने की घोषणा की।

बेहतर सड़क संपर्क के लिए कुंजुम पास के नीचे सुरंग निर्माण की संभावनाओं का सर्वेक्षण और डीपीआर तैयार करने की पहल की जाएगी। मुख्यमंत्री ने रोंगटोंग में बैटरी स्टोरेज

से संचालित प्रदेश के पहले सौर ऊर्जा संयंत्र का लोकार्पण भी किया। इसके अलावा काजा और समदो में 47.95 करोड़ रुपये की लागत से बिजली उपकेन्द्र बनाने की आधारशिला रखी गई। समदो-काजा ट्रांसमिशन लाइन पर लगभग 350 करोड़ रुपये खर्च करने और इसे तीन वर्षों में पूरा करने का लक्ष्य है।

शिक्षा के क्षेत्र में मुख्यमंत्री ने विद्यार्थियों को विशेष कोचिंग, कौशल प्रशिक्षण और नैतिक शिक्षा उपलब्ध करवाने की बात कही। काजा में कॉलेज खोलने की संभावनाएं भी तलाशी जाएंगी। स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए काजा में स्त्री रोग विशेषज्ञ और मेडिसिन विशेषज्ञ तैनात करने की घोषणा की गई।

सरकार ने स्पीति में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने और काजा में हेलिपोर्ट निर्माण के लिए सर्वेक्षण करवाने की बात भी कही। इन पहलों का उद्देश्य स्थानीय लोगों को बेहतर सुविधाएं और युवाओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाना है।

अगले शैक्षणिक सत्र से स्कूलों में शुरू होगी नैतिक शिक्षा: मुख्यमंत्री

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविन्द्र सिंह सुक्खू ने कहा कि हिमाचल प्रदेश के स्कूलों में आगामी शैक्षणिक सत्र से नैतिक शिक्षा शुरू की जाएगी। इसके लिए पाठ्यक्रम

काजा स्कूल में छात्र-छात्राओं से संवाद, छात्रावास और बेहतर सुविधाएं देने का आश्वासन

उन्होंने विद्यार्थियों को मेहनत करने और जीवन में लक्ष्य निर्धारित करने



तैयार किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों में अच्छे संस्कार विकसित करने के साथ पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाना भी जरूरी है।

मुख्यमंत्री ने काजा स्थित सीबीएसई स्कूल में विद्यार्थियों से संवाद किया और उनकी समस्याएं सुनीं।

के लिए प्रेरित किया। विद्यार्थियों ने स्कूल में छात्रावास के लिए कुक, सफाई कर्मचारी और महिला वार्डन की कमी का मुद्दा उठाया। मुख्यमंत्री ने छात्र और छात्राओं के लिए अलग-अलग छात्रावास तथा शिक्षकों के लिए आवास बनाने का

आश्वासन दिया। विद्यार्थियों ने कक्षाओं में ठंड और रोशनी की कमी की समस्या भी बताई। मुख्यमंत्री ने स्कूल भवन और सुविधाओं में सुधार के लिए धन उपलब्ध करवाने की बात कही।

विशेष कोचिंग की मांग पर उन्होंने सकारात्मक कदम उठाने का भरोसा दिया। उन्होंने कहा कि स्पीति में कौशल प्रशिक्षण और पर्यटन से जुड़े पाठ्यक्रम शुरू करने पर भी विचार किया जाएगा, ताकि स्थानीय युवाओं को रोजगार और स्वरोजगार के अवसर मिल सकें।

मुख्यमंत्री ने कहा कि स्पीति में पर्यटन और आइस हॉकी जैसी गतिविधियों को बढ़ावा देने से स्थानीय लोगों की आय बढ़ाने में मदद मिलेगी। इस अवसर पर विधायक अनुराधा राणा भी उपस्थित रहीं।

चिट्टे के खिलाफ अभियान में विद्यार्थी, अभिभावक और शिक्षक निभाएं भूमिका: डीजीपी

शिमला/शैल। हिमाचल प्रदेश के पुलिस महानिदेशक अशोक तिवारी ने विद्यार्थियों, अभिभावकों और शिक्षकों से प्रदेश सरकार के 'एंटी-चिट्टा जन आंदोलन' में सक्रिय भागीदारी निभाने

चेल्सी स्कूल के वार्षिक समारोह में नशे से बचाव का संदेश, ईआरएसएस-112 की जानकारी दी

कारवाई तक सीमित नहीं है। इसका



की अपील की। उन्होंने कहा कि युवाओं को नशे से बचाना पुलिस ही नहीं, बल्कि परिवार, शिक्षण संस्थानों और पूरे समाज की साझा जिम्मेदारी है।

डीजीपी ने शिमला के कॉन्वेंट ऑफ जीसस एंड मैरी स्कूल चेल्सी के वार्षिक समारोह में कहा कि चिट्टे के खिलाफ लड़ाई केवल नशा तस्करों पर

उद्देश्य युवाओं का भविष्य सुरक्षित करना भी है।

उन्होंने अभिभावकों से बच्चों के साथ समय बिताने, उनकी समस्याएं सुनने और ऐसा माहौल बनाने का आग्रह किया, जिसमें वे बिना झिझक अपनी बात कह सकें। शिक्षकों और अभिभावकों को नशे के शुरुआती संकेतों पर ध्यान

अशोक तिवारी ने विद्यार्थियों से अपने मित्रों को नशे से दूर रहने के लिए जागरूक करने और गलत दबाव में आकर फैसले नहीं लेने की अपील की। उन्होंने कहा कि सफलता केवल अच्छे इंसान बनने से भी जुड़ी है।

उन्होंने विद्यार्थियों के सांस्कृतिक कार्यक्रमों, ड्रिल, बैड, कराटे और स्केटिंग प्रदर्शन की सराहना की।

इस अवसर पर हिमाचल प्रदेश पुलिस ने ईआरएसएस-112 के बारे में जागरूकता शिविर भी लगाया। विद्यार्थियों और अभिभावकों को आपातकालीन हेलपलाइन तथा 'ट्रैक मी' सुविधा की जानकारी दी गई। पुलिस के अनुसार, आपातकालीन प्रतिक्रिया समय की राष्ट्रीय रैंकिंग में हिमाचल 34वें स्थान से पहले स्थान पर पहुंचा है।

संजौली और रामपुर के बीच 21 अक्टूबर से शुरू होगी हेलीकॉप्टर सेवा

सप्ताह में तीन दिन मिलेगी सुविधा, रामपुर से रिकांगपिओ तक भी जाएगी उड़ान

शिमला/शैल। संजौली और रामपुर के बीच 21 अक्टूबर, 2026 से हेलीकॉप्टर सेवा शुरू होगी। यह सेवा सप्ताह में तीन दिन सोमवार, शुक्रवार और शनिवार को उपलब्ध रहेगी। रामपुर से रिकांगपिओ तक भी हेलीकॉप्टर से सफर किया जा सकेगा। प्रदेश सरकार के एक प्रवक्ता ने यह जानकारी दी।

निर्धारित समय के अनुसार, हेलीकॉप्टर सुबह 9:55 बजे संजौली से रवाना होकर 10:30 बजे रामपुर पहुंचेगा। इसके बाद सुबह 10:50 बजे रामपुर से उड़ान भरकर 11:25 बजे रिकांगपिओ पहुंचेगा। वापसी में हेलीकॉप्टर सुबह 11:30 बजे रिकांगपिओ से रवाना होकर दोपहर 12:05 बजे रामपुर पहुंचेगा। रामपुर से संजौली के लिए उड़ान दोपहर 12:10 बजे होगी और हेलीकॉप्टर 12:45 बजे संजौली पहुंचेगा।

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविन्द्र सिंह सुक्खू ने रामपुर विधानसभा क्षेत्र के दौर के दौरान स्थानीय लोगों से हेलीकॉप्टर सेवा शुरू करने का वायदा किया था। सरकार का कहना है कि इस सुविधा से दूधराज और दुर्गम क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को आवागमन का एक वैकल्पिक

साधन मिलेगा और शिमला तक पहुंचना आसान होगा।

प्रवक्ता के अनुसार, पवन हंस लिमिटेड ने क्षेत्रीय संपर्क योजना 'उड़ान' के तहत शिमला-रामपुर मार्ग पर सेवा शुरू करने की पहल की है। उड़ान 5.1 के तहत शिमला, रामपुर, रिकांगपिओ, कुल्लू, मनाली, मंडी और चंडीगढ़ को जोड़ने वाले मार्ग विभिन्न विमानन कंपनियों को आवंटित किए गए हैं।

फिलहाल हेरिटेज एविएशन शिमला-रिकांगपिओ, शिमला-कुल्लू-शिमला और चंडीगढ़-मंडी वाया कुल्लू मार्गों पर उड़ानें संचालित कर रही है। पवन हंस शिमला के संजौली और चंडीगढ़ के बीच सप्ताह में तीन दिन हेलीकॉप्टर सेवा दे रहा है।

राज्य सरकार क्षेत्रीय संपर्क योजना के तहत प्रति सप्ताह नौ अतिरिक्त उड़ानों के लिए व्यवहार्यता अंतर वित्तपोषण (वीजीएफ) की पूरी राशि भी वहन करती है। इस पर सरकार का खर्च लगभग 35.70 लाख रुपये प्रतिमाह है। इन व्यवस्थाओं से शिमला और चंडीगढ़ के बीच सप्ताह में छह दिन हवाई संपर्क उपलब्ध है।

पीजीआई और एम्स से पीजी करने वाले डॉक्टरों को मेरिट पर मिलेगी नियुक्ति

रेजिडेंट डॉक्टरर्स पॉलिसी-2025 में संशोधन, लिखित परीक्षा और इंटरव्यू की जरूरत नहीं

शिमला/शैल। हिमाचल प्रदेश सरकार ने पीजीआई चंडीगढ़ और एम्स नई दिल्ली से स्नातकोत्तर (पीजी) डिग्री प्राप्त करने वाले पात्र डॉक्टरों की नियुक्ति प्रक्रिया आसान कर दी है। अब इन संस्थानों से डिग्री लेने वाले योग्य चिकित्सकों को प्रदेश के मेडिकल कॉलेजों में सीनियर रेजिडेंट और ट्यूटर स्पेशलिस्ट के रिक्त पदों पर मेरिट के आधार पर नियुक्त किया जाएगा।

स्वास्थ्य विभाग के प्रवक्ता के अनुसार, सरकार ने रेजिडेंट डॉक्टरर्स पॉलिसी-2025 में संशोधन कर यह प्रावधान शामिल किया है। इसके तहत डॉक्टरों की चयन प्रक्रिया एमबीबीएस और पीजी परीक्षाओं में प्राप्त मेरिट के

आधार पर पूरी होगी। इन नियुक्तियों के लिए लिखित परीक्षा या साक्षात्कार नहीं लिया जाएगा। ये नियुक्तियां सीधी भर्ती के लिए निर्धारित 33.33 प्रतिशत कोटे के अंतर्गत की जाएंगी।

सरकार का कहना है कि इस फैसले से योग्य विशेषज्ञ डॉक्टरों की भर्ती आसान होगी और प्रदेश के सरकारी मेडिकल कॉलेजों में विशेषज्ञ चिकित्सा सेवाओं को मजबूत करने में मदद मिलेगी।

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविन्द्र सिंह सुक्खू के नेतृत्व में प्रदेश सरकार सरकारी चिकित्सा महाविद्यालयों को मजबूत करने, मेडिकल शिक्षा के अवसर बढ़ाने और लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध करवाने पर जोर दे रही है।

हिमाचल में स्वास्थ्य सेवाओं के लिए नर्सों और तकनीकी स्टाफ की भर्ती जारी

650 सहायक स्टाफ नर्सों को नियुक्ति, 1300 पदों पर भर्ती प्रक्रिया जारी

शिमला/शैल। हिमाचल प्रदेश सरकार ने सरकारी अस्पतालों और मेडिकल कॉलेजों में स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत करने के लिए पैरामेडिकल और तकनीकी कर्मचारियों की भर्ती प्रक्रिया तेज करने की जानकारी दी है। चिकित्सा शिक्षा विभाग के तहत मेडिकल कॉलेजों और चमियाणा स्थित अटल इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल सुपर स्पेशिएलिटी में 650 सहायक स्टाफ नर्सों को नियुक्त किया गया है। इसके अलावा आदर्श स्वास्थ्य संस्थानों में 117 नर्सों को नियुक्ति दी गई है।

सरकारी प्रवक्ता के अनुसार, सहायक स्टाफ नर्सों के 1300 पदों पर भर्ती प्रक्रिया जारी है। मंत्रिमंडल ने स्वास्थ्य विभाग में 500 अतिरिक्त नर्सों की भर्ती को भी मंजूरी दी है।

ऑपरेशन थियेटर असिस्टेंट के चिकित्सा शिक्षा विभाग में 84 और

स्वास्थ्य विभाग में 39 पदों पर नियुक्ति पत्र जारी किए गए हैं। स्वास्थ्य विभाग में रेडियोग्राफर के 21 पदों पर नियुक्ति पत्र जारी किए गए हैं, जबकि 17 फार्मासिस्टों को नियुक्त किया गया है और 74 फार्मासिस्टों की भर्ती प्रक्रिया जारी है। इसके अलावा मेडिकल लैब तकनीशियन, लैब सहायक, रेडियोग्राफर, फिजियोथेरेपिस्ट और ऑपरेशन थियेटर असिस्टेंट सहित विभिन्न पदों पर भर्ती की जा रही है।

सरकार ने 31 दिसंबर 2026 तक सभी सरकारी मेडिकल कॉलेजों में 90 प्रतिशत चिकित्सा, पैरामेडिकल और सहायक स्टाफ की उपलब्धता सुनिश्चित करने का लक्ष्य रखा है। स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए आधुनिक चिकित्सा मशीनों और उपकरणों पर करीब 3,000 करोड़ रुपये खर्च किए जा रहे हैं।

कनाडा में गुंजा कुल्लू दशहरा, मुख्यमंत्री ने वर्चुअल संदेश से दी बधाई

शिमला/शैल। हिमाचली प्रवासी ग्लोबल एसोसिएशन (एचपीजीए) ने कनाडा की राजधानी ओटावा स्थित पार्लियामेंट हिल में कुल्लू दशहरा उत्सव का भव्य आयोजन किया। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविन्द्र सिंह सुक्खू ने वर्चुअल माध्यम से लोगों को संबोधित करते

ओटावा के पार्लियामेंट हिल में हिमाचली संस्कृति की झलक, कनाडा के प्रधानमंत्री ने भी दी शुभकामनाएं

मुख्यमंत्री ने कहा कि विदेशों में भारतीय समुदाय द्वारा अपने त्योहारों और परंपराओं को उत्साह से मनाना देश की सांस्कृतिक विरासत और विविधता में एकता की भावना

लालोंद ने की। एचपीजीए ने 35 से अधिक भारत-कनाडाई संगठनों के सहयोग से इसका आयोजन किया। समारोह में पारंपरिक हिमाचली नाटी और झमाकड़ा लोकनृत्य, रामलीला तथा अन्य सांस्कृतिक प्रस्तुतियां आकर्षण का केंद्र रहीं। अतिथियों को हिमाचली पारंपरिक व्यंजन और धाम भी परोसी गई।

मुख्यमंत्री ने कहा कि ऐसे आयोजन विदेशों में रह रहे हिमाचलियों को अपनी जड़ों से जोड़े रखते हैं और नई पीढ़ी को अपनी संस्कृति से परिचित करवाते हैं। उन्होंने हिमाचली समुदाय को एकजुट करने और प्रदेश के पर्यटन तथा परंपराओं को बढ़ावा देने के लिए एचपीजीए के प्रयासों की सराहना की।

कनाडा के प्रधानमंत्री मार्क कार्नी ने भी कुल्लू दशहरा पर शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कनाडा की सांस्कृतिक विविधता और भारत-कनाडाई समुदाय के योगदान को महत्वपूर्ण बताया।



हुए आयोजकों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि दशहरा बुराई पर अच्छाई और अधर्म पर धर्म की जीत का प्रतीक है। यह पर्व हमें सत्य और न्याय के साथ खड़े रहने की प्रेरणा देता है।

को दर्शाता है। ऐसे आयोजन हिमाचल प्रदेश की संस्कृति को अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

इस कार्यक्रम की मेजबानी ऑरलियन्स की सांसद मैरी-फांस

रंगरिक में बालिका छात्रावास के लिए 2 करोड़ रुपये देगा हिमाचल स्वास्थ्य उपकेन्द्र को प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र बनाने की घोषणा

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविन्द्र सिंह सुक्खू ने स्पीति घाटी के रंगरिक में बालिका छात्रावास के नए भवन के निर्माण के लिए 2

करने की भी घोषणा की।

मुख्यमंत्री ने 'सरकार गांव के द्वार' कार्यक्रम के तहत रंगरिक में रात्रि प्रवास किया और मंजुश्री में

दिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि दुर्गम क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की जरूरतों को समझने और उन्हें बेहतर सुविधाएं देने के लिए सरकार सीधे लोगों से संवाद कर रही है।

इस दौरान मुख्यमंत्री ने राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला रंगरिक के बालिका छात्रावास का निरीक्षण किया और छात्राओं से बातचीत की। छात्राओं ने बेहतर आवासीय सुविधाओं की मांग रखी। मुख्यमंत्री ने छात्रावास की चारदीवारी, पानी की समस्या और महिला वार्डन सहित कर्मचारियों की नियुक्ति से जुड़ी समस्याओं के समाधान का भी आश्वासन दिया।

इससे पहले उन्होंने वृद्धाश्रम जाकर बुजुर्गों से बातचीत की और उन्हें मिल रही सुविधाओं की जानकारी ली। इस अवसर पर विधायक अनुराधा राणा भी उपस्थित रहीं।



करोड़ रुपये देने की घोषणा की। उन्होंने रंगरिक के स्वास्थ्य उपकेन्द्र को प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में स्तरोन्नत

लोगों की समस्याएं सुनीं। उन्होंने अधिकारियों को समस्याओं के समाधान के लिए आवश्यक निर्देश

कुंजुम टनल के निर्माण से पहले होगा सर्वे, स्पीति पर खर्च होंगे 500 करोड़ प्राकृतिक खेती क्षेत्र बनाने, कॉलेज और हेलिपोर्ट की संभावनाएं तलाशने की घोषणा

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री सुखविन्द्र सिंह सुक्खू ने कुंजुम पास के नीचे टनल निर्माण के लिए सर्वे करवाने और विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार करने का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि टनल बनने से क्षेत्र में सालभर सड़क संपर्क बेहतर होगा और स्थानीय लोगों के साथ पर्यटकों को भी सुविधा मिलेगी।

काजा में जनसभा को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार स्पीति के विकास पर 500 करोड़ रुपये खर्च करेगी। समदो-काजा ट्रांसमिशन लाइन का काम तीन साल में पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है, जिस पर करीब 350 करोड़ रुपये खर्च होंगे।

मुख्यमंत्री ने स्पीति को प्राकृतिक खेती क्षेत्र बनाने, काजा में कॉलेज खोलने की संभावनाएं तलाशने और

हेलिपोर्ट निर्माण के लिए सर्वे करवाने की घोषणा की। उन्होंने काजा में स्त्री रोग विशेषज्ञ और मेडिसिन



विशेषज्ञ नियुक्त करने का भी आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि सरकार क्षेत्र में बिजली आपूर्ति बेहतर बनाने और स्थानीय लोगों की आय

बढ़ाने के लिए प्रयासरत है। मुख्यमंत्री ने पुरानी पेंशन योजना, स्वास्थ्य सेवाओं और जनकल्याणकारी

योजनाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि सरकार विकास कार्यों के साथ लोगों को बेहतर सुविधाएं देने के लिए प्रतिबद्ध है।

तंबाकू मुक्त युवा अभियान 3.0 में हिमाचल का शानदार प्रदर्शन

28 अक्टूबर को नई दिल्ली में मिलेगा सम्मान, मुख्यमंत्री ने स्वास्थ्य विभाग के प्रयासों को सराहा

शिमला/शैल। तंबाकू मुक्त युवा अभियान 3.0 में हिमाचल प्रदेश को बड़े राज्यों की श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले राज्यों में शामिल किया गया है। इस उपलब्धि के लिए प्रदेश को 28 अक्टूबर, 2026 को नई दिल्ली में सम्मानित किया जाएगा। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविन्द्र सिंह सुक्खू ने इसके लिए स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग के प्रयासों की सराहना की।

मुख्यमंत्री ने कहा कि विभाग की मेहनत और प्रभावी कार्यप्रणाली से प्रदेश को यह उपलब्धि हासिल हुई है। अभियान का मुख्य उद्देश्य युवाओं को तंबाकू के सेवन से बचना और इसकी लत छोड़ने के लिए जरूरी सहयोग उपलब्ध करवाना है।

वर्ष 2023 में शुरू किए गए इस अभियान का तीसरा चरण 60

दिनों का विशेष अभियान है। इसके तहत तंबाकू के नुकसान के प्रति जागरूकता बढ़ाने, शिक्षण संस्थानों में तंबाकू मुक्त परिसर सुनिश्चित करने और तंबाकू नियंत्रण से जुड़े कानूनों को प्रभावी ढंग से लागू करने पर जोर दिया जा रहा है।

इसके अलावा तंबाकू मुक्त गांवों को प्रोत्साहित करने, सोशल मीडिया के माध्यम से लोगों को जागरूक करने और संबोधित अधिकारियों की कार्यक्षमता बढ़ाने के लिए भी कदम उठाए गए हैं।

विशेषज्ञ समिति ने इन गतिविधियों के आधार पर राज्यों के प्रदर्शन का मूल्यांकन किया। 13 अप्रैल, 2026 को हुई बैठक में बड़े राज्यों, छोटे राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की अलग-अलग श्रेणियां बनाकर प्रदर्शन का आकलन करने का निर्णय लिया गया था।

आरट्रैक के जनरल ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ ने राज्यपाल से की भेंट

शिमला/शैल। जनरल ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ, आर्मी ट्रेनिंग कमांड लेफ्टिनेंट जनरल श्री जय प्रताप सिंह ने लोक भवन में

महत्वपूर्ण भूमिका की सराहना की। उन्होंने कठिन परिस्थितियों में भी राष्ट्र की सेवा के प्रति सेना के जवानों के समर्पण, अनुशासन और प्रतिबद्धता की



राज्यपाल कविन्द्र गुप्ता से भेंट की। यह एक शिष्टाचार भेंट थी।

इस दौरान राज्यपाल ने देश की सीमाओं की सुरक्षा, राष्ट्रीय सुरक्षा बनाए रखने तथा राष्ट्र की संप्रभुता और अखंडता की रक्षा में भारतीय सेना की

भी प्रशंसा की।

राज्यपाल ने इस अवसर पर सशस्त्र बल और प्रदेश की जनता के बीच मजबूत संबंधों पर चर्चा करते हुए कहा कि हिमाचल प्रदेश सैन्य सेवा और बलिदान की गौरवशाली परंपरा वाला राज्य है।

नशा तस्करों की 74.12 लाख की संपत्ति फ्रीज

शिमला/शैल। हिमाचल प्रदेश में नशा तस्करों के आर्थिक नेटवर्क पर कारवाई करते हुए नूरपुर पुलिस ने

खरीदा गया करीब 5.13 लाख रुपये का ट्रैक्टर भी फ्रीज किया गया है।

पुलिस ने आरोपी की संपत्तियों



करीब 74.12 लाख रुपये की संपत्ति फ्रीज की है। नई दिल्ली स्थित सक्षम प्राधिकारी ने 15 अक्टूबर, 2026 को इस कारवाई की पुष्टि कर दी।

पुलिस के अनुसार, फ्रीज की गई संपत्तियों में कांगड़ा जिले की ज्वाली तहसील के गांव लभ में स्थित दो मंजिला आवासीय एवं व्यावसायिक भवन शामिल हैं। इसमें सात दुकानें हैं और इसकी कीमत करीब 68.99 लाख रुपये आंकी गई है। इसके अलावा, वर्ष 2019 में

और उन्हें खरीदने के लिए इस्तेमाल किए गए धन की जांच की थी। ट्रैक्टर खरीदने में इस्तेमाल की गई राशि के स्रोत को साबित करने के लिए पर्याप्त दस्तावेज नहीं मिले। पुलिस के मुताबिक, अब तक सक्षम प्राधिकारी की पुष्टि के बाद नूरपुर पुलिस करीब 30.70 करोड़ रुपये की संपत्तियों पर कार्रवाई कर चुकी है। पुलिस ने लोगों से नशा तस्करी और संदिग्ध संपत्तियों की जानकारी साझा करने की अपील की है।

घोषणाओं का हिसाब दे सरकार धरातल पर कितनी बदली तस्वीर?

शिमला/शैल। दिसंबर में कांग्रेस सरकार के चार वर्ष पूरे होने से पहले असली सवाल यह है कि सरकार ने चार वर्षों में घोषणाओं के मुकाबले धरातल पर कितना काम किया। हिमाचल प्रदेश में विकास और जनकल्याण की योजनाओं के बड़े-बड़े दावे किए जा रहे हैं, लेकिन इनकी असली परीक्षा सरकारी घोषणाओं से नहीं, धरातल पर दिखाई देने वाले परिणामों से होगी। शिक्षा में हजारों नियुक्तियों का लक्ष्य हो या स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार की बात, सड़क निर्माण हो या पेयजल योजनाएं-हर विभाग के सामने सबसे बड़ा सवाल यही है कि स्वीकृत लक्ष्यों के मुकाबले कितना काम पूरा हुआ और जनता को उसका कितना लाभ मिला।

स्वास्थ्य विभाग में भी घोषणाओं और वास्तविक सुविधाओं के बीच अंतर की पड़ताल जरूरी है। अस्पतालों में डॉक्टरों तथा विशेषज्ञों के रिक्त पद, ग्रामीण स्वास्थ्य संस्थानों की कार्यशीलता, उपकरणों की उपलब्धता और निर्माणाधीन परियोजनाओं की स्थिति सामने आनी चाहिए। नए पद स्वीकृत करना और भर्ती प्रक्रिया शुरू करना एक बात है, जबकि अस्पतालों में पर्याप्त कर्मचारी उपलब्ध होना दूसरी। मरीजों को उपचार के लिए दूर जाना पड़ रहा है या नहीं, आवश्यक जांच सुविधाएं उपलब्ध हैं या नहीं और स्वीकृत भवनों में सेवाएं शुरू हुई हैं या नहीं-इन सवालों के जवाब ही स्वास्थ्य व्यवस्था की वास्तविक तस्वीर देंगे।

शिक्षा मंत्री रोहित ठाकुर ने 19 अक्टूबर को मंडी के धर्मपुर में कहा कि वर्तमान सरकार के कार्यकाल में शिक्षा विभाग में लगभग 10 हजार नियुक्तियों की जा चुकी हैं और इस वर्ष पांच हजार अतिरिक्त शिक्षकों की नियुक्तियों का लक्ष्य रखा गया है। इसके पूरा होने पर कुल नियुक्तियों का आंकड़ा लगभग 15 हजार तक पहुंचने का दावा है। लेकिन इस लक्ष्य की वास्तविक स्थिति जानने के लिए सरकार को बताना होगा कि कितने पदों पर चयन पूरा हुआ, कितने नियुक्ति आदेश जारी किए गए और कितने शिक्षक स्कूलों में कार्यभार संभाल चुके हैं। साथ ही जिलावार और विषयवार रिक्त पदों का विवरण भी सार्वजनिक होना चाहिए। नियुक्तियों की संख्या बढ़ने के बावजूद यदि दुर्गम स्कूलों में शिक्षक उपलब्ध नहीं हैं, तो गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का दावा अधूरा रहेगा।

शिक्षा विभाग में जवाबदेही केवल भर्ती तक सीमित नहीं हो सकती। सरकारी स्कूलों में विद्यार्थियों के सीखने का स्तर, विज्ञान और गणित जैसे विषयों में शिक्षकों की उपलब्धता, आधारभूत सुविधाएं और परीक्षा परिणाम भी प्रदर्शन के महत्वपूर्ण संकेतक हैं। धर्मपुर में खेल सुविधाओं और पुस्तक वितरण केंद्र के विस्तार जैसी स्थानीय पहल उपयोगी हो सकती हैं, लेकिन इनसे प्रदेशभर के सरकारी स्कूलों की स्थिति का आकलन नहीं किया जा सकता। सरकार को यह स्पष्ट करना होगा कि शिक्षा पर खर्च और नई नियुक्तियों का असर विद्यार्थियों तक किस हद तक पहुंचा है।

लोक निर्माण विभाग की उपलब्धियों को सड़कों की घोषणाओं या टेंडर की संख्या से नहीं मापा जा सकता। कितने मार्ग निर्धारित समय में पूरे हुए, कितनी परियोजनाएं लंबित हैं और आपदा से क्षतिग्रस्त सड़कों की बहाली में कितना समय लगा, इसका परियोजनावार विवरण आवश्यक है। इसी तरह जल शक्ति विभाग को केवल स्वीकृत योजनाओं की संख्या नहीं, बल्कि नियमित पेयजल पाने वाले गांवों, चालू योजनाओं और पानी की गुणवत्ता की स्थिति बतानी चाहिए। पहाड़ी प्रदेश में सड़क और पेयजल की समस्या सीधे लोगों की रोजमर्रा की जिंदगी को प्रभावित करती है।

वित्तीय प्रबंधन की जवाबदेही भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। बजट में किसी योजना के लिए राशि निर्धारित होना इस बात का प्रमाण नहीं कि वह राशि समय पर जारी हुई, खर्च की गई या उससे अपेक्षित

परिणाम हासिल हुए। विभागवार बजट प्रावधान, वास्तविक व्यय, लंबित भुगतान और परियोजनाओं की भौतिक प्रगति का मिलान होना चाहिए। यदि योजनाएं स्वीकृति के बाद भी धन या प्रशासनिक मंजूरी के अभाव में अटकती हैं, तो सरकार को देरी के कारण स्पष्ट करने होंगे।

कृषि और बागवानी विभागों के लिए किसानों को समय पर भुगतान, खरीद केंद्रों की उपलब्धता और विपणन सुविधाओं का विस्तार महत्वपूर्ण कसौटियां हैं। परिवहन विभाग के मामले में बसों की खरीद से ज्यादा जरूरी यह है कि कितनी बसें वास्तव में चल रही हैं, कितने ग्रामीण रूट नियमित हैं और कहां सेवा की कमी बनी हुई है। सामाजिक सुरक्षा योजनाओं में भी केवल लाभार्थियों की स्वीकृति नहीं, बल्कि पात्र लोगों को समय पर सहायता मिलने का आंकड़ा महत्वपूर्ण है।

इन सभी क्षेत्रों में सरकार के दावों की जांच बजट

दस्तावेजों, विभागीय प्रगति रिपोर्ट, टेंडर, नियुक्ति आदेश, विधानसभा प्रश्नों के आधिकारिक उत्तर और लेखापरीक्षा निष्कर्षों के आधार पर होनी चाहिए। विपक्ष के आरोपों को भी दस्तावेजी प्रमाण से अलग रखकर देखना जरूरी है। बिना आधिकारिक रिकॉर्ड के किसी विभाग को विफल घोषित करना उतना ही अनुचित होगा, जितना केवल सरकारी घोषणा को उपलब्धि मान लेना।

सरकार को अब विभागवार लक्ष्य, वास्तविक उपलब्धि, खर्च और लंबित कार्यों का स्पष्ट हिसाब सार्वजनिक करना चाहिए। जनता के लिए महत्वपूर्ण यह नहीं कि कितनी योजनाओं की घोषणा हुई, बल्कि यह है कि कितनी पूरी हुई, कितने पद भरे गए, कितनी सेवाओं में सुधार आया और कितने काम अब भी अधूरे हैं। सरकारी प्रदर्शन की विश्वसनीय कसौटी यही होगी कि घोषणाओं और धरातलीय परिणामों के बीच की दूरी कितनी कम हुई है।

इस सही क्षेत्रों में सरकार के दावों की जांच बजट

केन्द्र से स्वीकृत परियोजनाओं का लाभ जनता तक पहुंचाने में देरी क्यों

शिमला/शैल। हिमाचल प्रदेश में विकास परियोजनाओं को लेकर भाजपा और कांग्रेस के बीच टकराव तेज हो गया है। केंद्रीय मंत्री जगत प्रकाश नड्ड के प्रदेश सरकार पर सवाल उठाने के बाद भाजपा विधायक एवं प्रदेश मीडिया प्रभारी रणधीर शर्मा ने मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू की सरकार को घेरते हुए पूछा है कि केंद्र से स्वीकृत परियोजनाओं का लाभ जनता तक पहुंचाने में देरी क्यों हो रही है। भाजपा ने प्रदेश में 1.20 लाख करोड़ रुपये से अधिक की परियोजनाओं और सहायता प्रावधानों का हवाला देकर सरकार से खर्च, निर्माण और लंबित कार्यों का पूरा हिसाब मांगा है।

रणधीर शर्मा ने आरोप लगाया कि कांग्रेस सरकार केंद्र के सहयोग को नजरअंदाज कर अपनी प्रशासनिक कमियों से ध्यान हटाने

के लिए राजनीतिक बयानबाजी कर रही है। उन्होंने स्वास्थ्य मंत्री डॉ. धनीराम शांडिल और उद्योग मंत्री हर्षवर्धन चौहान से कहा कि वे आरोपों का जवाब देने के बजाय परियोजनावार प्रगति का ब्योरा जनता के सामने रखें। हालांकि, भाजपा के दावों की पूरी तस्वीर सामने आने के लिए परियोजनाओं की लागत, जारी राशि और वास्तविक खर्च का अलग-अलग विवरण जरूरी है।

शर्मा ने राष्ट्रीय राजमार्गों के लिए 55,103 करोड़ रुपये, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के लिए 13,697 करोड़ रुपये, भानुपल्ली-बिलासपुर-बैरी रेल परियोजना के लिए 13,410 करोड़ रुपये और चंडीगढ़-बढ़ी रेल परियोजना के लिए 1,540 करोड़ रुपये का उल्लेख किया। उन्होंने स्पष्ट किया कि कुल आंकड़े में परियोजना लागत, केंद्रीय सहायता और वित्तीय प्रावधान शामिल हैं, न

कि प्रदेश सरकार को मिली एकमुश्त राशि। इसके बावजूद उन्होंने सवाल उठाया कि सरकार बताये कि इन परियोजनाओं में कितने काम पूरे हुए और कहां देरी हो रही है।

स्वास्थ्य क्षेत्र में भाजपा ने पीएम-अभिम के तहत लगभग 360 करोड़ रुपये की परियोजनाओं की प्रगति पर सवाल उठाए। शर्मा के अनुसार, समीक्षा में नौ स्वीकृत क्रिटिकल केयर ब्लॉकों में से एक के पूरा होने, 12 एकीकृत सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रयोगशालाओं में से किसी के पूरा नहीं होने और 73 ब्लॉक पब्लिक हेल्थ यूनिट में से 29 के निर्माण की जानकारी सामने आई थी। उन्होंने सरकार से पूछा कि शेष संस्थान कब तैयार होंगे और मरीजों को सुविधाएं कब मिलेंगी।

ऊना बल्क ड्रग पार्क के लिए स्वीकृत 1,000 करोड़ रुपये के केंद्रीय अनुदान में से 225 करोड़

रुपये जारी होने और लगभग 117 करोड़ रुपये खर्च होने का हवाला देते हुए शर्मा ने उद्योग मंत्री से परियोजना की समयसीमा और शेष कार्यों पर जवाब मांगा। चंडीगढ़-बढ़ी रेल परियोजना में राज्य की लगभग 231 करोड़ रुपये की लंबित हिस्सेदारी तथा आपदा पुनर्निर्माण के लिए स्वीकृत सहायता पर भी उन्होंने स्थिति स्पष्ट करने को कहा।

रणधीर शर्मा ने मांग की कि सुक्खू सरकार परियोजनावार श्वेतपत्र जारी कर स्वीकृत राशि, वास्तविक प्राप्ति, खर्च और अधूरे कार्यों का विवरण दे। अब राजनीतिक बहस का असली सवाल यही है कि केंद्र और राज्य के दावों के बीच विकास परियोजनाएं जमीन पर कितनी आगे बढ़ी हैं। इसका जवाब आरोपों से नहीं, आधिकारिक आंकड़ों और समयबद्ध कार्ययोजना से ही मिल सकेगा।